चाँद हमेशा दूर-दराज़ की महबूब और सजीली, लेकिन कठिन और नाक़ाबिले-हुसूल (अप्राप्य) मंज़िलों का सिम्बल रहा है, जो कोहे-निदा की तरह मुसाफ़िरों को बुलाती तो हैं, लेकिन वापस नहीं भेजती। समझदार लोग कभी इन मनाज़िले-मौहूम (धुँधली मंज़िलें) का रुख़ नहीं करते, बल्कि बेचैन दिनों और बेख़्वाब रातों के वुजूद से बेख़बर लतीफ़ों वाले मुसव्विर (चित्रित) पर्चे पढ़ते ख़ुशहाल चोंचाल ज़िन्दगी बसर करते हैं। लेकिन सुना है, अगर जादू के मौहूम शहरों की तलब में जूलां (बेड़ी में) रहने वाले दीवाने न होते, तो ये ज़िन्दगी बड़ी ही सपाट और बेरंग होती। इतनी गम्भीर और दिलनवाज़ कभी न होती...अब ये अपनी-अपनी तबीअत पर मुन्हसिर (आधारित) है कि गोश-ए-आफ़ियत (कुशलता) पसन्द करती है या उस नाइट की राह इख़्तियार करती है।

इब्ने इंशा का जन्म 15 जून सन् 1927 ई. को ज़िला जालन्धर के एक ग़रीब किसान परिवार में हुआ। प्रारम्भिक शिक्षा लुधियाना हाई स्कूल से प्राप्त करने के बाद घरेलू समस्याओं के कारण उन्होंने अम्बाला छावनी में नौकरी की। यह नौकरी एकाउंट्स की थी, अतः स्वभाव में मेल न खाने के कारण वह इसे छोड़कर आल इंडिया रेडियो दिल्ली से सम्बद्ध हो गये। विभाजन के समय इब्ने इंशा दिल्ली छोड़कर लाहौर आ गये और यहाँ उन्होंने उच्च शिक्षा प्राप्त की। उर्दू कालेज से एम.ए. और कालेज पत्रिका का सम्पादन भी किया। पीएच.डी. में दाख़िला लेने के बावजूद उनके रचनात्मक स्वभाव ने उन्हें यह काम न करने दिया। वह रेडियो कराची से भी सम्बन्धित रहे तथा उन्होंने सरकारी पत्रिकाओं का सम्पादन भी किया। इसके अतिरिक्त उन्होंने पाकिस्तानी संविधान सभा में अनुवादक और यूनेस्को में पाकिस्तान के प्रतिनिधि की हैसियत से भी काम किया और पूरी दुनिया की सैर की। 11 जनवरी 1978 ई. को लन्दन में इक्यावन वर्ष की बहुत कम आयु में उनका देहान्त हो गया।

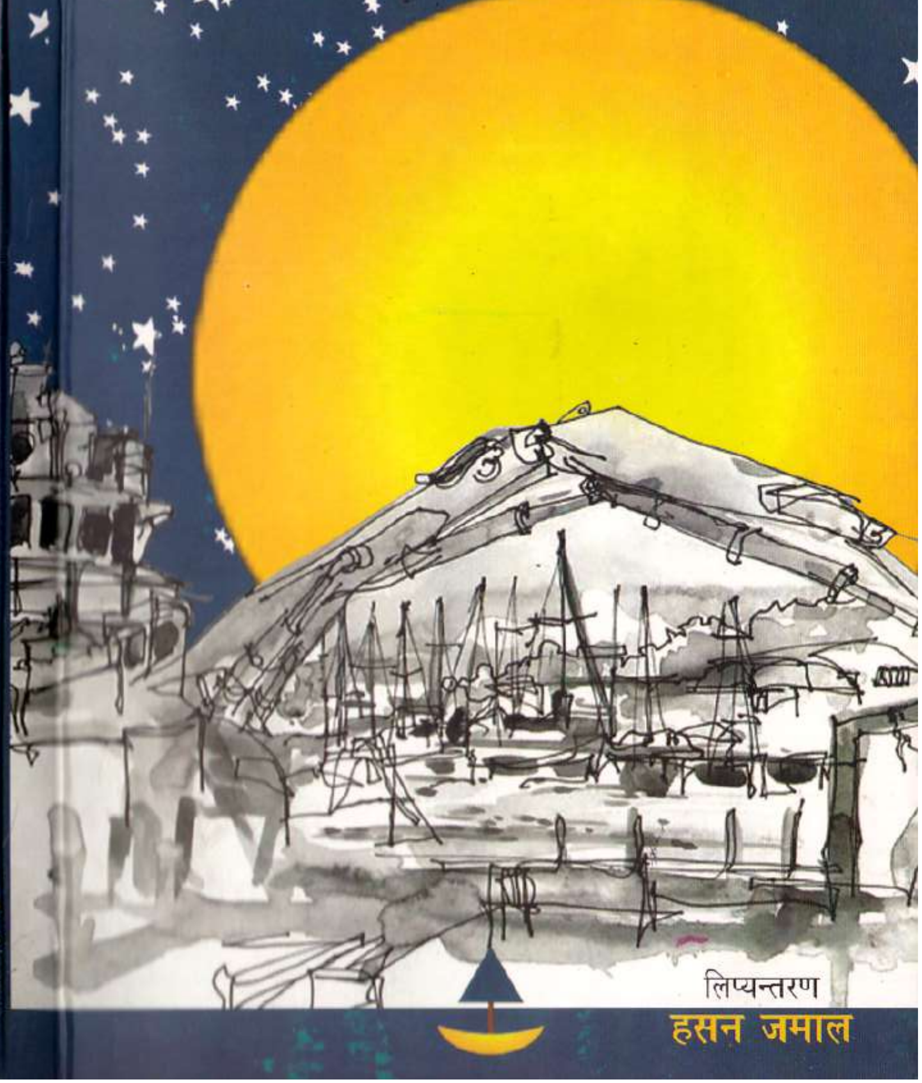
वाणी प्रकाशन

ISBN : 978-93-5072-660-0
www.vaniprakashan.in
Ghazal/Shayari

चाँद नगर
इब्ने इंशा

इब्ने इंशा

चाँद नगर



लिप्यन्तरण
हसन जमाल

चाँद नगर

इब्ने इंशा

लिप्यन्तरण

हसन जमाल

वाणी प्रकाशन

वाणी प्रकाशन
4695, 21-ए, दरियागंज, नयी दिल्ली 110 002

शाखा
अशोक राजपथ, पटना 800 004

फ़ोन: +91 11 23273167 फ़ैक्स: +91 11 23275710

www.vaniprakashan.in
vaniprakashan@gmail.com

CHAND NAGAR
by Ibne Insha
Translated by Hasan Jamaal

ISBN : 978-93-5072-660-0
Ghazals/Shayari

प्रथम संस्करण
मूल्य : ₹ 150

हर्ष प्रिंटर्स, दिल्ली-110 093 में मुद्रित

वाणी प्रकाशन का लोगो मक़बूल फ़िदा हुसेन की कूची से

प्रकाशकीय टिप्पणी

धीमी आँच का इश्क़
घायल लहजा, जोग वियोग की
कहानियाँ कहता हुआ,
गये मौसमों की ख़ुशबू,
और अजनबी राहों का ग़ुबार
ये है 'इन्शाजी' के सीपारः-ए-दिल
चाँदनगर
की दुनिया
जिसमें दिल मोहने वाले रेख़्ते भी हैं
और लाज़वाल तवील नज़्में भी;
बग़दाद की एक रात,
शंघाई, मज़ाफ़ात
अम्न का आख़िरी दिन
उफ़्ताद वगैरह

(इज़ाफ़ों के साथ)

पहले एडिशन की भूमिका

एडगर ऐलन पो की एक नज़्म है—'एल्डो रेडो' यानी 'शहरे—तमन्ना' क़िस्सा इसका ये है कि एक बहादुर जीदार नाइट ओपची बना। धूप और साये से बेपरवा एल्डो रेडो की तलाश में मस्ताना गीत गाता, घोड़ा उड़ाता चला जा रहा है, लेकिन बरसों गुज़र गये। ज़िन्दगी की शाम आ गयी। उसे रू-ए-ज़मीन पर कोई ख़ित्ता ऐसा न मिला जो उसके ख़्वाबों के शहर का मसील (उदाहरण) होता। आख़िर जब उसकी ताब व तुवां (ऊर्जा) जवाब देने को थी, उसे एक बूढ़ा फूस ज़ायर मिला जो सफ़र की सऊबतों (तकलीफ़ों) से घुल कर साये के समान रह गया था। उस पीर-फ़रतूत ने भवों की झालर हटाते हुए कहा—'अगर तुम्हें इस शहरे-जादू की तलाश है, तो चाँद की पहाड़ियों के उधर सायों की वादी-ए-तवील में क़दम बढ़ाये, घोड़ा दौड़ाये आगे ही आगे बढ़ते चलो....

मालूम नहीं, उस सूरमा नाइट को वो शहरे-तमन्ना मिला कि नहीं, लेकिन सफ़र जारी रखने और घोड़ा आगे बढ़ाने का बहाना ज़रूर मिल गया। शाइर को भी ज़ेहनी तौर पर सिन्दबाद जहाज़ी या यूलिसिस होना चाहिए यानी उसके सामने एक न एक एल्डो रेडो—एक न एक 'चाँदनगर' का होना ज़रूरी है। चाँद की पहाड़ियों के हवाले से ख़याल होता है कि दोनों शहर, ये दोनों मंज़िलें कहीं एक न हों। चाँद हमेशा दूर-दराज़ की महबूब और सजीली, लेकिन कठिन और नाक़ाबिले-हुसूल (अप्राप्य) मंज़िलों का सिम्बल रहा है, जो कोहे-निदा की तरह मुसाफ़िरों को बुलाती तो हैं, लेकिन वापस नहीं भेजती। समझदार लोग कभी इन मनाज़िले-मौहूम (धुँधली मंज़िलें) का रुख़ नहीं करते, बल्कि बेचैन दिनों और बेख़्वाब रातों के वुजूद से बेख़बर लतीफ़ों वाले मुसव्विर (चित्रित) पर्चे पढ़ते ख़ुशहाल चोंचाल ज़िन्दगी बसर करते हैं। लेकिन सुना है, अगर जादू के मौहूम शहरों की तलब में जूलां (बेड़ी में) रहने वाले दीवाने न होते, तो ये ज़िन्दगी बड़ी ही सपाट और बेरंग होती। इतनी गम्भीर और

दिलनवाज़ कभी न होती...अब ये अपनी-अपनी तबीअत पर मुन्हसिर (आधारित) है कि गोश-ए-आफ़ियत (कुशलता) पसन्द करती है या उस नाइट की राह इख़्तियार करती है।

मैं उफ़तादे-तब्अ (प्रकृति) के एतबार से बेशक रोमानी, बल्कि अलिफ़ लैलवी वाक़े हुआ हूँ, लेकिन रहता एक ऐसी दुनिया में हूँ जो शहरज़ाद की दुनिया से मुख़्तलिफ़ है। मेरी तवील नज़्में ज़्यादातर गिर्दो-पेश की संगीन हक़ीक़तों से मेरे अलिफ़ लैलवी मिज़ाज के तसादुम (संघर्ष) की पैदावार हैं। लेकिन मैंने इश्क़ और ग़ैर इश्क़ के महाज़ों पर अलग-अलग लड़ना पसन्द किया है। मेरे हाँ "आ, मेरी जाँ जाँ इन्क़िलाब" का आमेज़ा (मिश्रण) नहीं, न मुझे आँचल को पर्चम बनाने की अदा पसन्द है। मेरे हाँ आपको लज़्ज़ते-इश्क़, बहजते-इश्क़ (इश्क़ की ख़ुशी) और ज़िल्लते-इश्क़ के ज़ाती वारदात भी मिलेंगे। दिल की वीरानी और वारस्तगी (आज़ादी) की हिकायतें भी कि ''उदास रात के आंगन में'', ''पिछले पहर के सन्नाटे में'', ''कातिक का चांद'' में और "ए मतवालो नाक़ों वालो" में बिखरी हुई हैं। और उनके साथ-साथ "अम्न का आख़िरी दिन", "उफ़्ताद" और "मुज़ाफ़ात" वग़ैरह भी, जिनमें वाज़ेह (स्पष्टतः) सियासी शुऊर झलकता है। अगर इन नज़्मों में भी कि तरक़्क़ीपसन्द हैं, बाज़ जगह आप को तज़बज़ुब (असमंजस) की कैफ़ियत मिलती है, तो ये मेरी हिम्मतों की पस्ती की तर्जुमान (प्रवक्ता) है। इसे मैंने इसलिए ख़ारिज नहीं रखा कि मेरी शाइरी ज़ाती शाइरी रहे, तब्लीग़ी (प्रचारात्मक) न बने।

परियों की कहानियों में एक ज़िद्दी बोना सर हिलाकर कहता है कि इन्सानियत का धेला भर जौहर मेरे नज़दीक दुनिया भर की दौलत पर भारी है। मेरी कितनी ही नज़्में कि मुझे अज़ीज़ हैं, इसी धेला भर इन्सानियत के मुताल्लिक़ हैं। दुख, और आसूदगी (राहत), एहतियाज (ज़रूरत) और फ़राग़ (फ़ुर्सत) जंग और अम्न ज़िन्दगी के बुनियादी मसाइल (समस्याएँ) हैं। जो शख़्स इनसे बेएतिनाई (उपेक्षा) बरतता है, वो अपने ज़मींज़ाद भाइयों से मुख़्लिस (सद्भावक) नहीं हो सकता। फिर आज के ज़माने में ज़ेहनी या जिस्मी बनबास मुमकिन भी नहीं। किसी पहाड़ की कोई गुफ़ा ऐसी नहीं जिस तक ज़हरीली गैस या ताबनाक राख न पहुंच सकती हो। कोई वृन्दावन या तपोवन ऐसा नहीं जिसके बतन (गर्भ) में फ़ौजी तययारों (जहाज़ों) का अड्डा न हो। हमें ज़िन्दा हक़ीक़तों से पीछा छुड़ाने के बजाय उनसे ओहदाबरा (मुक्त) होना है। उन्हीं में एक ये कि सोशलिज़्म का दौर वापस जाने के लिए नहीं आया है। धाँधली, मुफ़ाहमत (समझौता) और जंग सब नुस्ख़े पुराने हैं। लोग इन्हें आज़माएँगे। नफ़सियाती (मनोवैज्ञानिक) मुग़ालते भी दामनगीर होंगे, लेकिन किसी निज़ाम की नाकामी का मे'यार ये नहीं कि उससे किसी ढिलमिल इन्टलेक्चुअल की ज़ेहनी तशफ़्फ़ी (सन्तुष्टि) हो। देखना ये है, आया इससे लाखों, करोड़ों साधारण और ग़ैर इन्टलेक्चुअल इन्सानों की ज़िन्दगी में मर्सरत और शादमानी का गुज़र हुआ कि नहीं।

दूसरी जंगे-अज़ीम के दौरान मुझ में फ़नकाराना एहसास न जागा था। एक आमी के एहसास और फ़नकाराना एहसास में फ़र्क़ है। एक आमी के तौर पर दस, पन्द्रह या कि सोलह के सिन (आयु) के बावजूद मसाइल को कुछ-कुछ समझना और बात है और जज़्बे में वो तीखापन और रचाव होना और कि शाइरी में ढल सके। कोरिया की लड़ाई ने अलबत्ता मुझे झँझोड़कर रख दिया और उसकी बाज़गश्त (अनुगूँज) मेरी अब तक की नज़्मों में सुनाई देगी। मेरे लिए जंग किसी अख़बार की मोटी सुर्ख़ी नहीं, बल्कि आग और तबाही का नाम है और सिपाही महज़ वर्दी, बन्दूक़ और तमग़ा नहीं, बल्कि किसी बेटे, भाई या प्यारे का जिस्म और रूप है :

'गाफ़' गबरू है कि बाईस बहारों में पले
'लाम' लाशा है कि दो रोज़ के अन्दर सड़ जाये।

सार्त्र ने फ़्रांस पर नाज़ी क़ब्ज़े के दिनों में लिखा था कि फ़्रांस में कम्यून की शिकस्त के बाद लोगों पर जो ज़ुल्म ढाये गये, उनके लिए मैं फ़्लाबेयर और गान्कोर को क़ुसूरवार ठहराता हूँ, क्योंकि उन्होंने उस को रोकने के लिए एक लफ़्ज़ भी तो नहीं लिखा। अगर ये काम उनका नहीं था, तो क्या ज़ां केला का मुआमला वाल्टेयर के फ़राइज़ (कर्तव्यों) में दाख़िल था? क्या ड्रोफ़स की वकालत ज़ोला पर फ़र्ज़ थी? क्या कांगो मुस्तबिद (ज़ालिम) हाकिमों के ख़िलाफ़ आवाज़ बलन्द करने की ज़िम्मेदारी आंद्रे ज़ीद पर आयद होती थी—इनमें से हर शख़्स ने अपने मख़्सूस हालात में एक बार रुककर ये सोचा कि बहैसियत मुसन्निफ़ (लेखक) के मेरी क्या ज़िम्मेदारी है? हमारे मुल्क पर जर्मनी के क़ब्ज़े ने हमें हमारी ज़िम्मेदारी समझा दी है।

क्या हमारे दौर की कोई ज़िम्मेदारी नहीं?

मैं आदर्शवाद को तरक़्क़ी या तरक़्क़ीपसन्दी के मुनाफ़ी (प्रतिकूल) नहीं समझता। हाँ, आदर्श आदर्श में फ़र्क़ है। एक मंज़िल पर आयडियालिज़्म और रोमानीयत-हक़ीक़तपसन्दी और तरक़्क़ीपसन्दी की हरीफ़ (प्रतिद्वन्द्वी) नहीं, बल्कि हलीफ़ (पक्षधर) बन जाती हैं। रोमानी इन्क़िलाबियत ग़लत, लेकिन इन्क़िलाबी रोमानियत सही। मेरी ग़ैर इश्क़िया नज़्मों को इसी महक्क (कसौटी) पर परखिए।

तब्ओ-सोम (तीसरा एडिशन)

ये तब्ओ-सोम इशारा है शाइर की शाइरी की तरफ़ वापसी का। नये मज्मूए का वा'दा भी आठ साल बाद आज पूरा हो रहा है। इस मौक़े पर कोई उज्र करना उज्रे-गुनाह होगा। यूँ समझिए, सुबह का भूला शाम को घर वापस आ रहा है।

इस मज्मूए में एक नज़्म तो ऐसी है कि तब्ओ-अव्वल में थी, तब्ओ-दोम में न थी। "इसमें तो यही कुछ होता है।" दो नज़्में और हैं—"कूज़े की लड़ाई" और "कोरिया की ख़बरें"। ये लिखीं तो उसी ज़माने में गयी थीं 1951, 1952 में और रिसालों में छपीं भी, लेकिन मज्मूए में शामिल न की गयी थीं, क्योंकि हमें हुस्न से भी लगाव था, हमें ज़िन्दगी भी अज़ीज़ थी। वो दिन हमारे मुल्क में आज़ादारवों के लिए बड़ी सख़्तियों के थे। तवील नज़्मों के पूरे हिस्से का आप एक अलग मिज़ाज पाएँगे जो हमारे उन्फ़वाने-ज़िन्दगी (ज़िन्दगी की शुरुआत) का हासिल था और है। चाँद नगर, वही पुराना चाँद नगर।

11 जून, 1976

इब्ने इंशा

अनुक्रम

चाँद के तमन्नाई

शह्रे-दिल की गलियों में
शाम से भटकते हैं
चाँद के तमन्नाई
बेक़रार सौदाई
दिल गुदाज़[1] तारीकी[2]
जां-गुदाज़ तनहाई
रूह व जां को डसती है
शह्रे-दिल की गलियों में
ताके-शब की बेलों पर
शबनमीं सिरिश्कों[3] की
बे क़रार लोगों ने
यादगार छोड़ी है
इतनी बात थोड़ी है?

सद[4] हज़ार बातें थीं
हब्ल[5]-ए-शिकेबाई[6]
सूरतों की ज़ेबाई[7]
क़ामतों[8] की रा' नाई[9]
इन सियाह रातों में
एक भी ना याद आयी
जा-ब-जा भटकते हैं
किस की राह तकते हैं

---

1. हृदयद्रावी, 2. अँधेरा, 3. आँसुओं, 4. सौ, 5. राग, 6. सब्र, 7. सज्जा, 8. शरीर, 9. सुन्दरता

चाँद के तमन्नाई

ये नगर कभी पहले
इस क़दर ना वीरां था
कहने वाले कहते हैं
कर्यः[1] ए निगारां था
ख़ैर अपनी जीने का
ये भी एक सामां था।

आज दिल में वीरानी
अब्र[2] बन के घिर आयी
आज दिल को क्या कहिए
बावफ़ा ना हरजाई
फिर भी लोग दीवाने
आ गये हैं समझाने
अपनी वहशते[3]–दिल के
बुन लिए हैं अफ़साने
खुश ख़याल दुनिया ने

गर्मियाँ तो जाती हैं
वो रुतें भी आती हैं
जब मलूल[4] रातों में
दोस्तों की बातों में
जी ना चैन पाएगा
और ऊब जाएगा
आहटों से गूँजेगी
शहरे-दिल की पहनाई[5]
और चाँद रातों में
चाँदनी के शैदाई
हर बहाने निकलेंगे
आज़माने निकलेंगे

1. गाँव, 2. बादल, 3. त्रास, 4. उदास, 5. विस्तार

आरज़ू की गीराई[1]
ढूँढ़ने को रुस्वाई
सर्द सर्द रातों को
ज़र्द चाँद बख़्शेगा
बेहिसाब तनहाई
बेहिजाब तनहाई
शहरे-दिल की गलियों में

(1954)

1. पकड़

ए मतवालो! नाक़ों वालो!!

ए मतवालो नाक़ों[1] वालो देते हो कुछ उसका पता
'नजद' के अन्दर मज्नूं नामी एक हमारा भाई था
आख़िर उस पर क्या कुछ बीती, जानो तो अहवाल कहो
मौत मिली या लैला पायी, दीवाने का मआल[2] कहो
अक़्ल की बातें कहने वाले दोस्तों ने उसे समझाया
उस को तो लेकिन चुप-सी लगी थी, ना बोला ना बाज़ आया
ख़ैर अब उसकी बात को छोड़ो, दीवाना फिर दीवाना
जाते जाते हम लोगों का एक सन्देसा ले जाना

आवारा आवारा फिरना छोड़ के मण्डली यारों की
देख रहे हैं देखने वाले इन्शा का अब हाल वही
क्या ख़ुशवाश जवां था जाने क्यों बीमार हुआ
उठते बैठते 'मीर की ' बैतें पढ़ना उसका शिआर[3] हुआ
तौर-तरीक़ा उखड़ा-उखड़ा चेहरा पीला सख़्त मलूल[4]
राह में जैसे ख़ाक पे कोई मसला-मसला बाग़ का फूल
शाम सवेरे बाल बिखेरे बैठा-बैठा रोता है
नाक़ों वालो! इन लोगों का आलम कैसा होता है।

अपना भी वो दोस्त था हम भी पास उसके बैठ आते हैं
इधर उधर के क़िस्से कह के जी उसका बहलाते हैं
उखड़ी-उखड़ी बात करे है भूल के अगला याराना
"कौन हो तुम, किस काम से आये? हमने न तुम को पहचाना"

1. ऊँटनी, 2. अंजाम, 3. आचरण, 4. उदास

जाने ये किस ने चोट लगायी, जाने ये किस को प्यार करे
तुम्ही कहो हम किस को ढूँढ़ें, आहें खींचें नाम न लें
पीत में ऐसे बान से यारो कितने लोग गुज़रते हैं
पीत में नाहक़ मर नहीं जानते, पीत तो सारे करते हैं।

ए मतवालो नाक़ों वालो! नगरी नगरी जाते हो
कहीं जो उसकी जान का बैरी मिल जाये ये बात कहो
चाक गिरेबां इक दीवाना फिरता है हैरां हैरां
पत्थर से सर फोड़ मरेगा, दीवाने को सब्र कहाँ
तुम चाहो तो बस्ती छोड़े तुम चाहो तो दश्त[1] बसाए
तुम चाहो तो कुछ दिन जी ले दामन सी ले होश में आये
ए मतवालो नाक़ों वालो...वर्ना इक दिन ये होगा
तुम लोगों से आते जाते पूछेंगे 'इन्शा' का पता

(1953)

1. जंगल

ये सराय है

यह सराय है, यहाँ किस का ठिकाना ढूँढ़ो
यां तो आते हैं मुसाफ़िर, सो चले जाते हैं

हाँ, यही नाम था कुछ ऐसा ही चेहरा मोहरा
याद पड़ता है कि आया था मुसाफ़िर कोई
सूने आँगन में फिरा करता था तनहा तनहा
कितनी गहरी थी निगाहों की उदासी उसकी
लोग कहते थे कि होगा कोई आसेबज़दा
हमने ऐसी भी कोई बात न उसमें देखी

ये भी हिम्मत न हुई पास बिठा के पूछें
दिल ये कहता था कोई दर्द का मारा होगा
लौट आया है जो आवाज़ न उसकी पायी
जाने किस दर पे किसे जा के पुकारा होगा
यां तो हर रोज़ की बातें हैं ये जीतें मातें
ये भी चाहत के किसी खेल में हारा होगा

एक तस्वीर थी—कुछ आप से मिलती जुलती
एक तहरीर थी—पर उसका तो क़िस्सा छोड़ो
चन्द ग़ज़लें थीं कि लिखीं कभी लिख कर काटीं
शे'र अच्छे थे—जो सुन लो तो कलेजा थामो
बस यही माल मुसाफ़िर का था हमने देखा
जाने किस राह में किस शख़्स ने लूटा उसको

गुज़रा करते हैं सुलगते हुए बाक़ी अय्याम[1]
लोग जब आग लगाते हैं बुझाते भी नहीं
अजनबी पीत के मारों से किसी को क्या काम
बस्तियों वाले कभी नाज़ उठाते भी नहीं
छीन लेते हैं किसी शख़्स के जी का आराम
फिर बुलाते भी नहीं, पास बिठाते भी नहीं

एक दिन सुब्ह जो देखा तो सराय में न था
जाने किस देस गया है वो दीवाना-ढूँढ़ो।
हम से पूछो तो न आएगा वो जाने वाला
तुम तो नाहक़ को भटकने का बहाना ढूँढ़ो
यां तो आया जो मुसाफ़िर यूँ ही शब भर ठहरा
ये सराय है—यहाँ किस का ठिकाना ढूँढ़ो

(1951)

---
1. दिन

कातिक का चाँद

चाँद कब से है सरे-शाख़े-सनोबर[1] अटका
घास शबनम में शराबोर है शब है आधी
बाम[2] सूना है, कहाँ ढूँढ़ें किसी का चेहरा
लोग समझेंगे कि बेरब्त[3] हैं बातें अपनी
शे'र उगते हैं दुखी ज़ेहन से कोंपल कोंपल
कौन मौसम है कि भरपूर हैं ग़म की बेलें
दूर पहुँचे हैं सरकते हुए उदे बादल
चाँद तनहा है (अगर उसकी बलाएँ लेलें?)
दोस्तों जी का अजब हाल है, लेना बढ़ना
चाँदनी रात है कातिक का महीना होगा
'मीर' मग़्फ़ूर[4] के अश्आर न पैहम[5] पढ़ना
जीने वालों को अभी और भी जीना होगा
चाँद ठिठका है सरे-शाख़े-सनोबर कब से
कौन-सा चाँद है—किस रुत की हैं रातें लोगो
धुंद उड़ने लगी—बुनने लगी क्या क्या चेहरे
अच्छी लगती हैं दीवानों की-सी बातें लोगो
भीगी रात में दुबका हुआ झिंगुर बोला
कसमसाती किसी झाड़ी में से ख़ुशबू लपकी
कोई काकुल[6], कोई दामन, कोई आँचल होगा
एक दुनिया थी मगर हम से समेटी न गयी
ये बड़ा चाँद—चमकता हुआ चेहरा खोले

1. चीड़ का पेड़, 2. अटारी, 3. असम्बद्ध, 4. मोक्षवाला, 5. निरन्तर, 6. बालों की लट,

बैठा रहता है सरे-बामे-शबिस्तां[1]शब को
हम तो इस शहर में तनहा हैं, हमीं से बोले
कौन इस हुस्न को देखेगा ये इससे पूछो
सोने लगती है सरे-शाम ये सारी दुनिया
इनके हुजरों में न दर है न दरीचः[2] कोई
इनकी क़िस्मत में शबे-माह[3] को रोना कैसा
इनके सीने में न हसरत न तमन्ना कोई

किस से इस दर्दे-जुदाई की शिकायत कहिए
यां तो सीने में नयस्तां का नयस्तां[4] होगा
किस से इस दिल के उजड़ने की हिकायत कहिए
सुनने वाला भी जो हैरां नहीं, हैरां होगा
ऐसी बातों से न कुछ बात बनेगी अपनी
सूनी आँखों में निराशा का घुलेगा काजल
ख़ाली सपनों से न औक़ात बनेगी अपनी
ये शबे-माह भी कट जाएगी बेकल बेकल

जी में आती है कि कमरे में बुला लें इसको
चाँद कब से है सरे-शाख़े-सनोबर अटका
रात इसको भी निगल जाएगी बोलो बोलो
बाम पर और न आएगा किसी का चेहरा।

(1953)

1. शयनकक्ष के ऊपर, 2. खिड़की, 3. चाँद की रात, 4. नरकट का जंगल

ए मिरे सोचनगर की रानी

तुझ से जो मैंने प्यार किया है, तेरे लिए? नहीं अपने लिए
वक़्त की बेउन्वान कहानी, कब तक बेउन्वान रहे
ए मिरे सोचनगर की रानी, ए मिरे ख़ुल्दे-ख़याल[1] की हूर
इतने दिनों में जो मैं घुलता रहा हूँ तेरे बिना यूँही दूर ही दूर
सोच तो क्या फल मुझ को मिला, मैं मन से गया फिर तनसे गया
शह्रे-वतन में अजनबी ठहरा-आख़िर शह्रे-वतन से गया
रूह की प्यास बुझानी थी पर यहाँ होंठों की प्यास भी बुझ न सकी
बचते सँभलते भी एक सुलगता रोग बनी मिरे जी की लगी
दूर की बात न सोच! अभी मिरे हात में तू ज़रा हात तो दे
तूझ से जो मैंने प्यार किया है, तेरे लिए? नहीं अपने लिए

बाग़ में है इक बेले का तख़्ता भीनी है उस बेले की सुगन्ध
ए कलियो! क्यों इतने दिनों तुम रखे रहीं इसे गोद में बन्द
कितने ही हम से रूप के रसिया आये यहाँ और चल भी दिये
तुम हो कि इतने हुस्न के होते एक न दामन थाम सके
सहने-चमन पर भँवरों के बादल एक ही पल को छाएँगे
फिर न वो जा कर लौट सकेंगे फिर न वो जाकर आएँगे
ए मिरे सोचनगर की रानी, वक़्त की बातें रंग और बू
हर कोई साथ किसी का ढूँढ़े गुल हों कि बेले में हों कि तू
जो कुछ कहना है अभी कह ले जो कुछ सुनना है सुन ले
तुझ से जो मैंने प्यार किया है, तेरे लिए? नहीं अपने लिए

1. ख़याल की जन्नत

दिल की न पूछो क्या कुछ चाहे, दिल का तो फैला है दामन
गब्त से गाल, ग़ज़ल-सी आँखें, साइदे-सीमीं[1], बर्गे-दहन[2]
जूड़े के इन्हीं फूलों को देखो फल की सी इनमें बास कहाँ
एक इक तारा करके डूबी माथे की तन्नाज़ अफ़्शां[3]
सहने का दुख सह न सके हम, कहने की बातें कह न सके
पास तिरे कभी आ न सके हम, दूर भी तुझ से रह न सके
किस से कहे अब रूह की विपदा, किस को सुनाए मन की बात
दूर की राह, भटकता राही, जीवन रात घनेरी रात
होंठों की प्यास बुझानी है अब तिरे जी को ये बात लगे न लगे
तुझ से जो मैंने प्यार किया है, तेरे लिए? नहीं अपने लिए

(1954)

1. चाँदी जैसी कलाई, 2. मुँह की पंखुड़ी, 3. शोख़ माँग

ग़मे-रायगाँ[1]

फिर बहार आयी है फिर कलियों ने महकाये हैं बन
लेकिन ए यारो ख़जां अच्छी कि सीने की जलन
आज तो भादों की बरखा हो गये आँखों के नीर
सुबह दम देखेंगे उजला है कि मैला पैरहन
चाँद किन पेड़ों की शाख़ों में उलझ कर रह गया
इस अँधेरे में क़यामत हो चली जी की दुखन
अपनी रातों की फ़ुगां[2], तेरी सदा-ए-पी कहाँ
ए पपीहे अपनी क़िस्मत में कहाँ पी का मिलन?

कल भी अँधियारे घनेरे रास्ते तारीक थे
कल भी इस दामन की दौलत था ग़मे-दिल का गुबार
कल भी बुझ जाते थे, जल उठते थे यादों के दीये
कल भी दिल पर हाथ जा पड़ता था यूँही बारबार
कल भी आशुफ़्ता[3] थी उफ़्तादः[4] थी दामांदः उम्मीद
अपने कानों तक पहुँच पाती न थी अपनी पुकार
लहरिये बुनते थे बेताबी से अनजाने से गीत
झनझना उठते थे हर झोंके पे ग़मगीनी के तार

लेकिन इतनी भी सुहानी थी कहाँ दाग़ों की सैर
जी व्याकुल ही सही इतना मगर खुद से नफ़ूर[5]?
आज तो जी की लगी लेने लगी सदियों का बैर
चाँद निकला है—खुले अम्बर से लेकिन दूर दूर
बन की पहनाई में फिर छायी है फूलों की सुगन्ध

1.बेकार ग़म, 2. आर्तनाद, 3. व्याकुल, 4. दुखित, 5. नफ़रत करने वाला

आज तो उनको भी इस महफ़िल में लाना है ज़रूर
ओस में भीगा पपीहा सर पटक कर सो गया
और तू—? तेरा नहीं तेरे सितारों का क़ुसूर

कारवाँ-दर-कारवाँ सपनों को बिसराये हुए
लोग तो जाने लगे 'इन्शा' चलो तुम भी चलो

कब तलक अपने कतां[1] सीन से चिमटाए हुए
बे कफ़न ले के फिरोगे चाँदनी की लाश को
कौन से पी से लगायी है उम्मीद-ए-बाज़दीद[2]
कौन से पी के लिए बैतें कहो ग़ज़लें लिखो
चाँद मैला है, सितारों से दूर हैं, लम्बी है रात
बेकरां है दर्दे-महजूरी[3] का सागर दोस्तो

तुम पे तो बेनाम जादू कर गयी किरनों की बात
लौट जाएगी मगर शब भर चमक कर चाँदनी
दिल की हर धड़कन को दे जाएगी सदियो का सबात[4]
बेअमां, बेमहर, बेपरवा, सितगमर चाँदनी
दिन को किस कुल्फ़त[5] से पहुँचाती है वहशत ता बः शाम
और फिर खोले है जो दुखड़ों का दफ़्तर चाँदनी
जान किस किस किस आस की पादाश हैं अपने नसीब
यानी अक्सर इश्क़. अक्सर दर्द, अक्सर चाँदनी

साल आते हैं गुज़र जाते हैं रहता है वहीं
बेशिकन बिस्तर को महकाता हुआ कलियों का ढेर
हम जो हरजाई नहीं फिर कोई हरजाई नहीं
एक इक सपने में इक महवश[6] है और कितना दिलेर
यूँ ही बे पूछे ही दर आता है हर ताज़ा ख़याल
यूँ ही हर क़ामत के अपनाने में हो जाती है देर
गूँजती हैं मन की वीरानी में क्या क्या आहटें
और यूँ हर शाम की होती है मुश्किल से सवेर

1. अलसी के रेशे से बना कपड़ा, 2. जवाबी मुलाक़ात, 3. वियोग, 4. स्थिरता, 5. कष्ट, 6. चाँद की मानिन्द

दिल की अँगनाई को गरमाती है हर मौसम की धूप
कौन जाने बाग़ में अब के है किस रुत का चलन
इतने दामन, इतने आँचल, इतने चेहरे, इतने रूप
कौन इनमें से है अपने ख़्यालों की दुल्हन
आस्माँ है, वादी-ए-अंजुम[1] है, तनहा चाँद है
कोई दीवाना पसे-महमिल[2]-रवां ख़ुद में मगन
और यारों को अभी ज़िद है कि उठ के देख लो
फिर बहार आयी है फिर कलियों ने महकाएँ हैं बन

(1952)

1. तारों की वादी, 2. कजावा के पीछे

ऐसी रातें भी कई गुज़री हैं

कहाँ गया था-घड़ी दो घड़ी में लौट आया
शबे-फ़िराक़ का तारा-रकाब में लाया
उदास शाम-अभी कितनी रात बाक़ी है।
ये आज कौन-सी तारीख़ थी महीने की
मह-ए-तमाम[1] सरे-आस्मां उभर आया
मह-ए-तमाम-अभी कितनी रात बाक़ी है।
सुनो सुनो वो किसी दूर के मुहल्ले में
अदा-ए-ख़ास से है पहरेदार चिल्लाया
किसी का नाम-अभी कितनी रात बाक़ी है।
वो चर्च रोड के घंटे ने दो बजा भी दिये
वो फैल फैल चला नीम का घना साया
ये सहन व बाम[2]-अभी कितनी रात बाक़ी है?
ये किस के पाँव की झाँझन थी-किस नफ़्स[3] की सुगन्ध
ये किस के रुख़ का उजाला हुआ था-कौन आया
ख़याले-ख़ाम-अभी कितनी रात बाक़ी हैं?
हरीफ़े[4]-मर्हला-ए-हफ़्तख़ावां[5] है मंज़िले-इश्क़
इसी तरह जो दिले-बेक़रार भर आया
बहर-मक़ाम-अभी कितनी रात बाक़ी है?
सितारा सरे-मशरिक़[6]गुबारे-रह से मलूल[7]
दियारे[8]-दूर से यां तक तू किस तरह आया

1. पूर्णिमा का चाँद, 2. आँगन व छत, 3. अस्तित्व, 4. प्रतिद्वन्द्वी, 5. वे सातों मंज़िलें जो रुस्तम को तय करनी पड़ी थीं, 6. पूर्व की ओर, 7. उदास, 8. मुक़ाम

बः ईं ख़िराम[1]-अभी कितनी रात बाक़ी है?
उफुक़[2] पे ग़ौल-ए-बियाबां है या सुपेदःए-सुब्ह
शबे-फ़िराक़ तुझे यां तलक तो पहुँचाया
बः एहतिमाम[3]-अभी कितनी रात बाक़ी है?

(1953)

1. धीमी चाल, 2. क्षितिज, 3. प्रबन्ध

लोग पूछेंगे

लोग पूछेंगे क्यों उदास हो तुम
और जो दिल में आये सो कहियो!
यूँ ही माहौल की गिरानी[1] है
"दिन ख़ज़ां के ज़रा उदास से हैं"
"कितने बोझल हैं शाम के साये"
उनकी बाबत ख़मोश ही रहियो
नाम उनका न दरमियाँ आये

नाम उनका न दरमियाँ आये
उनकी बाबत ख़मोश ही रहियो
"कितने बोझल हैं शाम के साये"
"दिन ख़ज़ां के ज़रा उदास से हैं"
"यूँ ही माहौल की गिरानी है"
और जो दिल में आये सो कहियो।
लोग पूछेंगे क्यों उदास हो तुम?

(1948)

1. भारीपन

साये से

क्यों मिरे साथ साथ आता है?
मेरी मंज़िल है बेनिशां नादां?
साथ मेरा तिरा कहाँ नादां?
थक गये पाँव, पड़ गये छाले
मंज़िलें टिमटिमा रही हैं दूर—!
बस्तियाँ और जा रही हैं दूर—!
मैं अकेला चलूँगा ए साये
कौन अहदे[1]-वफ़ा निभाता है?
क्यों मिरे साथ साथ आता है?
तू अभी जा मिलेगा सायों में
मैं कहाँ जाऊँ मैं कहाँ जाऊँ?
किसकी आग़ोश में अमां पाऊँ?

(1944)

1. वचन

इन्तिज़ार की रात

उमड़े आते हैं शाम के साये
दम ब दम बढ़ रही है तारीकी
एक दुनिया उदास है लेकिन
कुछ से कुछ सोच कर दिले-वहशी
मुस्कराने लगा है—जाने क्यों?
वो चला कारवाँ सितारों का
झूमता नाचता सू-ए-मंज़िल[1]
वो उफ़ुक़[2] की जबीं[3] दमक उठी
वो फ़ज़ा मुस्करायी-लेकिन दिल
डूबता जा रहा-जाने क्यों?

(1945)

1. मंज़िल की तरफ़, 2. क्षितिज, 3. ललाट

वो दरीचे

कब से इस चौक में खड़ा हूँ मैं
उन दरीचों को तक रहा हूँ मैं
हाय क्या याद आ गया ए दोस्त
ज़िक्र है पार साल का ए दोस्त
बारहा सैर के लिए जाते
मैंने इस राह से गुज़रते हुए
एक मदकूक़[1]-सा हसीं चेहरा
इन दरीचों से झाँकते देखा
कितने मौहूम[2] वल्वले[3] जाने
हर नज़र में तड़प रहे होते
जैसे कोई ख़ज़ांज़दा पौधा
हो यही सोच सोच कर जीता
हैं कोई दिन-ये इन्तिज़ार के दिन
फिर पलट आएँगे बहार के दिन
जा के परदेस लौट आया हूँ
और इसी राह से गुज़रता हूँ
लेकिन ए दोस्त अब कभी मैंने
ये दरीचे खुले नहीं देखे
हुस्ने-बीमार मर गया शायद

सोचता हूँ ख़ज़ांज़दा पौधा
इन्तिज़ारे-बहार कर न सका
था बहारों से आशना शायद

(1944)

1. तपेदिक़ का रोगी, 2. भ्रममूलक, 3. उत्साह-उमंग

इसमें तो यही कुछ होता है

(एक नामर्बूत[1] कहानी)

1. ये ख़ालिश कहाँ से होती :

तू कहे जाएगा कब तक कि हुआ कुछ भी नहीं
ए दिल इस दर्द की सुनते हैं दवा कुछ भी नहीं
किसलिए चैन से महरूम हैं अपने शब व रोज़
कुछ समझ में नहीं आता, बखुदा कुछ भी नहीं
मेहरबाँ भी हैं, मुहब्बत भी है उनको हम से
लोग कहते हैं, मगर हम को पता कुछ भी नहीं
आज़माएँ तो सही जज़्ब-ए-मुहब्बत 'इन्शा'
उनकी नज़रों में चलो मान लिया कुछ भी नहीं

2.

ए तू कि तिरे हुस्न का शोहरा[2] है जहाँ में
क्यों इश्क़ पे एहसान गवारा नहीं तुझ को
ये बरहमी[3] नश्तर है हमारे रगे-जां में
क्यों पास कुछ ए दोस्त हमारा नहीं तुझको

कुछ ज़ुल्फ़े-शबाना[4] की न ख़ुशबू की हवस है
हम रंगपरस्तों की जसारत[5] पे न जाना
इक लम्ह-ए-शीरीं[6] का हमें लम्स[7] ही बस है
ए गुंचःए-नौयाफ़्ता[8] पहलू न चुराना

1. असम्बद्ध, 2. शोहरत, 3. अप्रसन्नता, 4. रात का, 5. दुस्साहस, 6. मीठे पल, 7. स्पर्श, 8. नवपुष्पित

हम आह भरें, नालः[1] करें, कुछ न कहें तो
सब तेरे लिए-तुझ को यक़ीं आये न आये
यारों ने कभी कैफ़ियते-दर्द जो पूछी
हम ने उन्हें बरजस्ता[2] फ़साने ही सुनाये।

पर तुम से तो पोशीदा नहीं अपनी हिकायत
इस रिश्तःए-नाजुक को न उलझाओ तो अच्छा
अब और बढ़ाओ न ग़मे-सब्रतलब को
अब पर्दःए-दूरी से निकल आओ तो अच्छा

3. कौन आया मिरे पहलू में ये ख़्वाब आलूदा
ज़ुल्फ़ बरहम[3] किये बा चश्मे-हिजाब आलूदा

बालों में तिरे शाना[4]बनें उँगलियाँ मेरी
बाहों को तिरी तकिय-ए-रुख़सार बनाया
चुपके से कभी डूब गया चाह-ए-ज़क़न[5] में
ज़ुल्फ़ों को लबों से कभी पलकों से लगाया

इस शब की सहर बर्क़[6]-बला थी कि छलावा
उस रात न ख़स्ता थे न दामांदा सितारे
रुख़सार तिरे सीन-ए-बियां[7] से लगा के
हम सो न सके कुल्फ़ते-अयूयाम[8] के मारे

फिर सर पे था ख़ुर्शीदे[9]-हक़ीक़त का उजाला
फिर ख़्वाब परेशां थे ख़यालों की रहों में
तुम थे कि तसव्वुर ही से आबाद थी दुनिया
सरगोशियाँ होती ही रहीं ख़्वाबगहों में

कुछ तुझ को ख़बर है कि ग़मे-नीमशबी में
मैं तेरी इनायत के सहारे ही जीया था
वहशत के बियाबां में मिरी तश्ना लबी ने
इन्आम में इक क़तरःए-शबनम ही पीया था

1. चीत्कार, 2. तुरन्त, 3. अस्त-व्यस्त, 4. कन्घा, 5. चिबुक कूपिका, 6. बिजली, 7. जलता हुआ सोना, 8. कष्टपूर्ण दिन, 9. सूरज

लेकिन इसी इक क़तरः-ए-शबनम की तलब मे
उम्मीद से महरूम जहाँगर्द था कब से
उसकी भी नज़र में थी दुज़्दीदः निगाही[1]
राही को गुज़रना था मगर मंज़िले-शब से

अब मौत गवारा न तिरा हिज्र गवारा
हम मुन्तज़िरे-आमदे-फ़र्दा[2] ही रहेंगे
तू ख़ूब समझता है निगाहों की ज़ुबां को
कहने को बहुत कुछ है मगर कुछ न कहेंगे।

4. दिल के टुकड़ों को बग़ल बीच लिए फिरता हूँ
कुछ इलाज इसका भी ए शीशागरां है कि नहीं

तुम्हें ता' ज्जुब हुआ है शायद मुझे जो है इश्क़ तुम से क्यों है
कि तुम से बढ़ के हसीं तो मुझ को हर एक कूचे में मिल सकेगा

तुम अपने दिल में समझ रहे हो, ये ख़ामकारी[3] है या जुनूँ है
ज़रा तग़ाफुल[4] से काम लोगे तो ख़ुद ही मैदान छोड़ देगा

अभी ये कल ही की बात है तुम को इस क़दर था ख़याल मेरा
कि शायद अपने पे जब्र करके भी मेरी हर बात मानते थे
अभी ये कल ही की बात है तुम उदास लम्हाते-नीमशब में
मिरे दिले-शेफ़्ता[5] की तस्कीं को हासिले-ज़ीस्त[6] जानते थे

तो फिर ये अपना क़ुसूर मानो-तुम्हीं ने लम्हाते-नीमशब में
मिरे दिले-दर्दमन्द को एक आरज़ू-ए-हयात बख़्शी
मुझे तो उस रात की सहर की न आरज़ू थी न ये ख़बर थी
कि इस सफ़ीने[7] को ग़म का ज़ुल्मात[8] पार करना है लाज़िमी

मैं दूर रखूँगा ख़ुद को तुम से तुम्हारे घर भी न आऊँगा
मगर तुम अपनी शफ़ीक़[9] नज़रों में अजनबीय्यत समो सकोगे
अगर मैं रातों को काहशे-ग़म[10] से ता सहर जागता रहूँगा
तो इस क़दर पास रह के भी मुझ से इस क़दर दूर हो सकोगे?

1. कनखियों से देखना, 2. आने वाला कल, 3. अनुभवहीनता, 4. उपेक्षा, 5. मुग्ध, 6. ज़िन्दगी का हासिल, 7. नाव, 8. अँधेरे, 9. मेहरबान, 10. ग़म के सदमे

मुझे तो मंजूर है ये सब कुछ मैं रो के जी लूँ सिसक के जी लूँ
मगर मिरी ऐसी ज़िन्दगी पर तुम्हीं को शायद मलाल होगा

न जाने किस किस शफ़ीक़ दिल पर ये शाक़[1] गुज़रेगा मेरा मरना
मिरा मरज़ लादवा नहीं था—मगर ये किस को ख़याल होगा

5. एक ग़ज़ल मुनासिबे-हालः
दिल ने हमारे बैठे बैठे कैसे कैसे रोग लगाये
तुम ने किसी का नाम लिया और आँखों में अपनी, आँसू आये

जितनी ज़बानें उतने क़िस्से अपनी उदासी के कारन के
लेकिन लोग अभी तक ये सादा-सी पहेली बूझ न पाये
इश्क़ किया है? किससे किया है? कब से किया है?कैसे किया है?
लोगों को इक बात मिली अपने को तो लेकिन रोना आये
राह मे यूँ ही चलते चलते उनका दामन थाम लिया था
हम उनसे कुछ माँगें चाहें हम से तो ये सोचा भी न जाये
नज्मे-सहर[2] के चेहरे से 'इन्शा' इतनी भी उम्मीदें न लगाओ
ऐसा भी हमने देखा है अक्सर रात कटे और सुब्ह न आये।

6. लो आज की शब भी सो चुके हम :
शामे-जुदाई फिर लौट आयी सोये हुए फ़ितनों को जगाया
इक बेनाम कसक के हाथों, बात बात पर दिल भर आया
आज भी शायद साथ तुम्हारा मंज़िल तक देना है सितारो
पहले भी हमने अक्सर तुम को सुबह की वादी तक पहुँचाया
आँख मिचौली खेला करेगे कब तक ये रातों के धुँधलके
चाप चाप पर दिल पूछेगा ये कौन आया ये कौन आया
'इन्शाजी' फिर इतने सवेरे सब्र का दामन छोड़ रहे हो
पिछली रात का दर्द अभी तक सीने से मिटने नहीं पाया।

7. ....लिखते रहा करो बैठे :
दिल दर्द में घुलता रहे, ये किस को गवारा है

1. असह्य, 2. सुबह के तारे

हम को तो मगर यारो, ये दर्द ही प्यारा है
उम्मीद का हर लम्हा अब वस्ल[1] का लम्हा है
जब दूर कनारा हो, हर मौज कनारा है
उस ज़ुल्फ़ ने अपने को क्या क्या नहीं उलझाया
जिस ज़ुल्फ़ को ख़ुद हमने सौ बार सँवारा है
वो रात गयी 'इन्शा', वो बात गयी 'इन्शा'
अब किस लिए जीते हो, अब किस सहारा है।

वग़ैरह वग़ैरह

1. मिलन

इन्शा ने फिर इश्क़ किया
(एक और नामर्बूत कहानी)

इन्शा ने फिर इश्क़ किया इन्शा साहब दीवाने
अपने भी वो दोस्त हुए हम भी चलेंगे समझाने

1. पैमान[1] महबूब से :

अपने को हम इस शहर में रुस्वा न करेंगे
अब तक जो हुआ ख़ैर, अब ऐसा न करेंगे
वा'दा है कि अब और जलाएँगे न जी को
नुक़्सान है इस में तो ये सौदा न करेंगे
ता शाम न इन कूचों में घूमेंगे परेशां
ता सुब्ह शबे-माह[2] में जागा न करेंगे
हर मोड़ पे ठिठकेंगे न दीवानों की सूरत
हर दर पे तुझे जा के पुकारा न करेंगे
लिखेंगे किसी और ही उन्वान की नज़्में
ग़ज़लों में भी इस बात का चर्चा न करेंगे

2. बातें अपने दिल के साथ :

वा'दा तो किया है मगर ईफ़ा[3] न करेंगे
ईफ़ा जो करेंगे कोई अच्छा न करेंगे
लोगों से छुपा लेंगे जो अहवाल है जी का
अपने से किसी बात में धोका न करेंगे

1. वादा, 2. चाँदनी रात, 3. प्रतिज्ञा पालन

ए दिल तिरे फ़र्मानों को टाला है टालें
उन की भी तिरे सामने परवा न करेंगे
इस राह को हम छोड़ के जाएँ किस जानिब
आजर्दा[1]न हो—हम कभी ऐसा न करेंगे
लिखेंगे उसी ठाठ से नज़्में कभी ग़ज़लें
हाँ आज से लोगों को दिखाया न करेंगे

3. ख़िताब किसी दोस्त का लोगों से :

हमने न कहा था कि वो क्या क्या न करेंगे
हाँ सब्र की कहते हो तो 'इन्शा' न करेंगे
बढ़ जाएगा आज़ारे[2]—मुहब्बत है ये लोगों
वो एक नज़र देख के अच्छा न करेंगे?
उन से ये कहो ऐसे दीवानों से न उलझें
सुन लेंगे मगर आप का कहना न करेंगे
सायल हैं फ़क़त एक इनायत की नज़र के
ये और किसी शै का तक़ाज़ा न करेंगे
दर से न उठाएँ वो ज़मानत पे हमारी
रुस्वा हैं मगर आपको रुस्वा न करेंगे।

4. बाब चहारम[3]—दरे-मुसाफ़रत[4]:

वो जी में कोई बात जो लाते हैं अज़ीज़ो!
ये सब न करेंगे, चलो अच्छा न करेंगे
तनहाई में ले जाएँगे समझाएँगे दिल को
ये मान भी जाएगा ये दा'वे न करेंगे
इतना है कि छोड़ेंगे ये दीवानों की सूरत
हम कल से सरे-राह भी बैठा न करेंगे
हो जाएँगे जा कर कहीं परदेस में नौकर
यां साल में इक बार भी आया न करेंगे
इस शहर में आयंदा न देखेंगे वो हम को
क्या क्या न किया इश्क़ में, क्या क्या न करेंगे।

(1954)

1. दुखी, 2. रोग, 3. चौथा अध्याय, 4. यात्रा में

फ़िरोगुज़ाश्त[1]

दर्द रुस्वा न था ज़माने में
दिल की तनहाइयों में बसता था
हर्फ़े-ना गुफ़्ता[2] था फ़साना-ए-दिल
एक दिन जो उन्हें ख़याल आया
पूछ बैठेः 'उदास क्यों हो तुम?'
"बस यूँ ही" मुस्करा के मैंने कहा
देखते देखते सरे–मिज़गां[3]
एक आँसू मगर ढुलक आया
इश्क़ नौ रस था–ख़ामकार[4] था दिल।
बात कुछ भी न थी मगर हमदम
अब मुहब्बत का वो नहीं आलम
आप ही आप सोचता हूँ मैं
दिल को इल्ज़ाम दे रहा हूँ मैं
दर्द बे वक़्त हो गया रुस्वा
एक आँसू था पी लिया होता
हुस्न मुहतात[5] हो गया उस दिन
इश्क़े-तौक़ीर[6] खो गया उस दिन
हाय क्यों इतना बे क़रार था दिल

(1947)

1. कोताही, 2. अकथनीय अक्षर, 3. पलकें, 4. अनुभवहीन, 5. सजग, 6. इश्क़ की प्रतिष्ठा

उदास रात के आँगन में

उदास रात के आँगन में रात की रानी
महक रही है–दिले-बेक़रार बात तो सुन
फ़लक पे निकला है पीला धुला धुलाया चाँद
कहाँ से चल के कहाँ तक है देख आया चाँद
कोई ख़ायाल-कोई याद-आर्ज़ू कोई
बड़े बहाने थे जी के गुदाज़[1] करने को
मगर तू चुप है सरे-आग़ाजे-शाम से चुप है
शबे-अगस्त के अफसाना ख़्वां[2] धुँधलके में
चटक रही है-पड़ी घोलती है वीरानी
उदास रात के आँगन में रात की रानी
घड़ी की सुइयाँ पैहम[3] ख़िराम आमादा
मगर मुसाफ़िरे-शब, ख़स्ता जान उफ्तादा[4]
गुज़रते वक़्त की वादी में एक मंज़िल पर
ठिठक गया है गुबारे-नजूम[5] में खोकर
कि एक रेल की सीटी ख़मोश मद्धम-सी
उजालती है तमन्ना की रहगुज़ारे-बईद[6]
सवादे[7]-शहर की बस्ती का ये शिकस्ता पुल
गयी बहार की बे बर्ग व बार[8] बेलों में
उलझ गया है-मगर पूछिए तो बेगाना
बुझा बुझा सा दीया कोई झिलमिलाता है

1. पिघलाना, 2. पढ़ने-वाला, 3. निरन्तर, 4. पड़ा हुआ, 5. तारे, 6. दूर, 7. आसपास की भूमि, 8. बिना फूल-पत्तियों के

सवादे-शहर की बत्ती की ख़ानक़ाह के पास
कि रफ़्तगान-ए-रहे-दूर का मुजाविर[1] है
ये रहगुज़र वही जिससे सारबानों[2] का
अलस्सुबह गुज़रता है क़ाफ़िला कोई
तमाम रात पड़ी करवटें बदलती है
न जाने किस के ग़मे-इन्तिज़ार में बेचैन।

बहुत मलूल बहुत ज़र्द हो चला नागाह[3]
अभी तो देखा था हमने धुला धुलाया चाँद
कहाँ से आया है कैसा पयाम लाया चाँद।

उजाड़ बस्तियों वीरान रास्तों में उदास
भटकने वाले को अब भी सदाएँ आती हैं
गुज़रते क़दमों गुलूगीर[4] सर्द आहों की
मगर मुसाफ़िरे-शब कारखाने-रफ़्ता में
किसी को किस तरह आवाज़े-पा[5] से पहचाने
ये लोग उसके लिए आशना न बेगाने
गुज़र भी जा तू हमारी तरफ़ ठिठक के न देख
घुले मिले से नुक़ूशे-ख़फ़ा[6] के अब्रे-खां[7]
कि वुसअतें[8] हैं सियाह आस्मां की बे पायां[9]

तू कौन शह्रे-वफ़ा का कोई पयामी है?
तिरे जो दिल में कोई दाग़े-ना तमामी है
शबे-अगस्त शबे-बेक़रार के महताब[10]
शबे-दुवाज़दहुम[11] के धुले धुलाए चाँद
मिरे अज़ीज़ कहीं और जा के दस्तक दे
कि इस जवार[12] के लोगों को जानता है तू
कि ये नवाह[13] कई साल से है कम आबाद
रहा नहीं है मुहब्बत के काम का कोई
नहीं यहाँ नहीं 'इन्शा' के नाम का कोई

(1954)

1. दरगाह का सेवक, 2. ऊँटों वाले, 3. अचानक, 4. रुँधी हुई, 5. पाँवों की आहट, 6. हल्के नक़्शा, 7. तैरते बादल, 8. फैलाव, 9. असीम, 10. चाँद, 11. 12 वां हिस्सा, 12. पड़ोस, 13. चारों ओर का क्षेत्र

सबा[1] का एक झोंका

गुलशन से सबा का एक झोंका बेगाना सिफ़त[2] गुज़र गया है

शक्लें नहीं ज़ेहन में गुलों की
बातें नहीं याद दोस्तों की
करते रहे लोग कुछ इशारे
आते रहे काकुलें[3] सँवारे
होंटों पे तबस्सुमों का जादू
आँखों में "अजीब शख़्स है तू"
दिल अजनबी अजनबी विचारा
ये हैरतों हसरतों का मारा
बैठा रहा सोज़[4]-सा जगाए
यानी : "कोई इस तरफ़ न आये"
गुलशन का हर इक निहाल[5] चौंका
गुलशन से सबा का एक झोंका
बेगाना सिफ़त गुज़र गया है

दिल का है अजीब हाल लोगो आता है तुम्हें ख़याल लोगों?

ऐसे भी हैं 'नजूद'[6] में दीवाने
रहते हैं जो इश्क़ में भी सियाने
कहने में कमी न जी के आयें
अपने से भी आप को छुपाएँ

1. पुर्वा हवा, 2. समान, 3. बातों की लट, 4. जलन, 5. पौधा, 6. अरब का एक प्रदेश जहाँ वहाबी संप्रदाय का जन्म हुआ

दिल में तो हज़ार आर्ज़ू है
होंठों पे कुछ और गुफ़्तगू है
लोगों ने कभी जो हाल पूछा
"कैसे हो कहो" सवाल पूछा
कहना यही "आपकी दुआ है।
बेगाना सिफ़त गुज़र गया है
गुलशन से सबा का एक झोंका

गुलशन से ख़राब लौट आये हम ने तो ये साल भी गँवाए

गुलशन था कि क़र्या निगारां
अपने ये नसीब थे न यारां
कलियों से गुलों से प्यार करते
वहशत कोई इख़्तियार करते
चटका किया दिल का एक घाव
कलियों ने भी कह दिया कि "जाओ"
माँगो ही नहीं तो तुमको क्या दें
काफ़ी हैं तुम्हें हमारी यादें
जी में था ग़ुबार हसरतों का
सीना था मज़ार हसरतों का
गुलशन से सब का एक झोंका
बेगाना सिफ़त गुज़र गया है।

(1953)

ढलती रात

ढलती हुई रात की ख़ामोशी
बस्ती की फ़ज़ा पे छा गयी है
ड्यूटी है तवील सन्तरी की
कुत्तों को भी नींद आ गयी है।

गिरजा की घड़ी ने झनझना कर
चुपके से जो दो बजा दिये हैं
लोगों ने गिरा लिए हैं पर्दे
लोगों ने दीये बुझा दिये हैं

हारा हुआ मार्केट का मज़दूर
ठेले पे दराज़ हो गया है
नाले ही पे ऊँघता है बैठा
पटरी ही पे पड़ के सो गया है।

सिगरेट तक की बन्द हैं दुकानें
सिनेमा भी उजड़ चुके हैं सारे
इक्का है न बस न घोड़ागाड़ी
बोझल हैं क़दम थकन के मारे

कोनों में दुबक गयी हैं आख़िर
पर्दों से वो झाँकती निगाहें
रोज़न[1] हैं तमाम ख़ाली ख़ाली
जलवे न लगावटें न आहें

1. छिद्र

तारों की उदास उदास पलकें
कहती हैं इन्हें भी कुछ हुआ है
कैसे भला सोएँ आँख झपकें
अब चाँद जो सर पे आ गया है।

हम से तो इसे ग़रज़ न होगी
जाने ये किसे बुला रही हैं
गूँजी है कहीं पे कोई सीटी
किस शहर की रेल जा रही है।

सिग्नल के दिये की एक चश्मक[1]
कहती है हज़ार कथाएँ
हम को भी क़रार की तलब है
किस दर पे चलें, किसे जगाएँ

(1951)

1. गुप्त बात के लिए आँख का संकेत

पिछले पहर के सन्नाटे में

पिछले पहर के सन्नाटे में
किस की सिसकी किस का नालः[1]
कमरे की ख़ामोश फ़ज़ा में दर[2] आया है

ज़ोर हवा का टूट चुका है
खुले दरीचे की जाली से
नन्ही नन्ही बूँदें छन कर
सब कोनों में फैल गयी हैं
और मिरे अश्कों से
उनके हाथ का तकिया भीग गया है

कितनी ज़ालिम
कितनी गहरी तारीकी है
खुला दरीचा थर थर थर थर काँप रहा है
भीगी मिट्टी सौंधी ख़ुशबू छोड़ रही है
ऊदे बादल,
काले अम्बर की झीलों में डूब गये हैं
किस के रुख़सारों की लर्ज़िश[3] देख रहा हूँ
किस की ज़ुल्फ़ों की शिकनों से खेल रहा हूँ
चुपके चुपके लेटे लेटे सोच रहा हूँ
पिछले पहर का सन्नाटा है
किस की सिसकी किस का नालः
कमरे की ख़ामोश फ़ज़ा में दर आया है।

1. आर्तनाद, 2. प्रविष्ट, 3. कम्पन

घने दरख़्तों में पुरवा की सीटी गूँजी
दूदकशों[1] में क़ैदी रूहें चीख़ रही हैं
कोनों में दुबके हुए झींगुर चिल्लाते हैं
महाराबों से भूतों के सर टकराते हैं
क़िले के इक बुर्ज के अन्दर
एक परी (शिलाट की रानी)
ख़न्दक़ के अनदेखे पानी की गहराई
अन्देशे के बालिश्तों से माप रही है।

माज़ी[2] की ड्योढ़ी की चिलमन
खुले दरीचे की जाली से
छन छन आयें
रूप की जोत हिना की लाली कल की यादें
सौंधी ख़ुशबू ठण्डी बूँदें
कल के बासी आँसू जिन से
फ़र्दा[3] के बालीं[4] का पर्दा भीग रहा है
सेहरज़दा[5] महबस[6] हसीना
सपनों के शिलाट की रानी
आईनों में हुस्ने-शिकस्ता देख रही है
कितने चेहरे टूटे-टूटे
पहचाने अनपहचाने से
आगे पीछे आगे पीछे भाग रहे हैं
क़िले के आसेब[7] की सूरत
किस की सिसकी किस का नालः
कमरे की ख़ामोश फ़ज़ा में दर आया है।

बिछड़े लोगो प्यारे लोगो
चाहें भी तो नाम तुम्हारे जान सकेंगे?
कैसे मानें तुम को हमारे
जी लेने की मर लेने की

---

1. धुआँकश, 2. अतीत, 3. भविष्य, 4. तकिया, 5. सम्मोहित, 6. कैदी, 7. प्रेत

ख़ुशी हुई, अफ़सोस हुआ है
तुम क्या जानो
किस के हाथ का तकिया
किस के गर्म अश्कों से भीग रहा है
खुले दरीचे की जाली से चिमटी आँखो
इक लम्हे के कौंदे में तुम
किन किन अजनबी चीज़ों को पहचान सकोगी?

जीवन खेल में हारे लोगो
बिछड़े लोगो प्यारे लोगो
बरखा की लम्बी रातों में
कमरे की ख़ामोश फ़ज़ा में
पिछले पहर के सन्नाटे में
रोते रोते जागने वाले
हम लोगों को सो लेने दो
और सवेरा हो लेने दो।

(1953)

ख़ज़ां की एक शाम

शाम हुई परदेसी पंछी घर को भागे
दिल अपना हम खोल के रखें किस के आगे

पतझड़ तू ने किस किस को हैरान किया है?
"बाग़ से फूल और फूल से भँवरा छीन लिया है"

भेड़ें क्यों खेतों के चक्कर काट रही हैं?
"मेंड़ों से उड़ती मिट्टी को चाट रही हैं"

पिछुआ तू ने अपनी सौंधी बास गँवायी
"आज से मैंने अगली रुत की आस गँवायी"

पौधे तू क्यों सूख रहा है ज़र्द हुआ है?
"इस जंगल में जीने से जी सर्द हुआ है"

सपनों की परियों के आँचल चूम रहे हैं
हम भी चुपचाप तनहा तनहा घूम रहे हैं

कैसे उजड़ी बस्तियों को आबाद करोगे
लोगो, कल तुम हम लोगों को याद करोगे

दिल अपना हम खोल के रखें किस के आगे
शाम हुई परदेसी पंछी घर को भागे।

(1954)

चल, सो चल

जिस दिन की रह देखी 'इन्शा' इतने बरसों आज और कल
वो दिन आया बीत गया मन फिर भी रहा बोझल बोझल

फागुन आये सावन आये इस धरती का हाल वही
गदला अम्बर, उजड़ी खेती, फुलवारी में फूल न फल

किस को बताएँ मन में हमारे मात के घाव कैसे हैं
आज कि इक दुनिया की नज़र में एक हमीं हम हैं पागल

टूटा साहस धुँधली बटया[1] रेत के तोदे गाम[2] बः गाम
वक़्त का कोड़ा सड़ सड़ सड़ सड़ चीख़ रहा है चल सो चल[3]

आज तो अपनी एक डगर है अपने सभी यारों से जुदा
अपना जहाँ अपना ही जहाँ है या जादू का गुंग महल

इस रुत में तो और भी उजड़ी लगती है मन की बगिया
कुम्हलाए सभी गुल बूटे आशा की लता नैनों के कमल

बाग़ ने कितनी कलियाँ खोयी बस्ती तक पहुँची ख़ुशबू
आँख से कितने नीर बहे हैं दामन तक पहुंचा काजल

अक़्ल ने सौदा और किया है घाटा खा और मोल गंवा
बंजारे इस राह को छोड़, ए बंजारे इस पैंठ से चल

यानी इस बाज़ार में दिल को इक अंटी में बेच दिया
इस 'यूसुफ़' के दिल की कामना होनी थी इस तौर सफ़ल

शहरे-जुनूं से दश्ते-जुनूं तक कितनी मुसाफ़त[3] थी 'इन्शा'
एक हमीं लौट आये हैं वर्ना यार गये सब दूर निकल

1. पगडंडी, 2. क़दम, 3. यात्रा

(1949)

सराय

नगर पराया, चेत महीना, सूनी रात, सराय
दीवारों पर मैले मैले फैले फैले साये
आने वाली कल का छलावा लपक झपक दिखलाये
क्या क्या स्वांग रचाये

घड़ी की सुई, सदियाँ बीत चुकीं तो एक बजाये
आस की बेल निहायत निर्बल छाया से शरमाये
अन्धा दीपक मतवाली पुरवा के थपेड़े खाये
काँप काँप रह जाये

नीलम नील आकाश पे अपना पीला जाल बिछाये
मुग्धम मुग्धम सन्देसों से अपने पास बुलाये
चंचल चन्दा दूर दूर से देखे और मुस्काये
लेकिन हाथ न आये

दिल पर सोच, पुरानी बेरन रह रह चोट लगाये
नाहक़ तुमने मंज़िल पथ पथ दीप जलाये
चार कूट वही घोर अँधेरा, चार कूट अन्याय
दिन दिन बढ़ता जाये

घूँ घूँ घूँ घूँ चर्ख़ी घूमे पहिया शोर मचाये
शप शप शप शप पट्टों में लिपटी क़िस्मत चक्कर खाये
कहीं तो चक्की मोटा पीसे, मैदा कहीं बनाये
और कहीं थम जाये

टिट टिट टिट टिट बैल की जोड़ी घूमे सीस झुकाये
हल की नोक लकीरें खींचे, लेख के भेद बताये

हलवाहा जहाँ सुबह समय था शाम को जब सुस्ताये
वहीं सितारे पाये

फिर ज़ुहरी[1] बम्बार फ़ज़ा पर झपटे और गुर्राये
पूरब देस धुएँ का बादल आग पड़ा बरसाये
पश्चिम के गिद्धों के लश्कर आये परें जमाये
लाशों पर मंडलाये

कभी उक़ाब कभी 'स्वास्तिका' इक आये इक जाये
जंग का लू का घर खेती खलियान पड़ा झुलसाये
कहीं तो वे रुत होली खेले, कहीं बसन्त मनाये
रूप अनोखे दिखाये

काल के काले काले राक्षस चार कूट में छाये
अँतड़ियों में भूक की किरचें जहाँ तहाँ हर जाये
गोदामों पर ख़ूनी पहरे खवे[2] से खवा मिलाये
संगीनें चमकाये

शहर का क़ाज़ी फ़तवे छापे, गली गली फैलाये
मोड़ मोड़ पर दुखिया गोरी याद के दीप जलाये
सोच रही है इतने दिन में कितने पाप कमाए
किस को गिनती आये

हम जागीर क़लम की ले कर क्या खोये क्या पाये
शब्द मनोहर, बोल कटीले, रम्ज़ें और किनाये[3]
सब ग़ज़लों के कहने वाले कवियों ने अपनाये
अपने हाथ न आये

पीत की मीठी बातें छोड़ें, छोड़ें और पछताये
धरती के बेटों की विपताओं के आल्हे गाये
चोरों की मानिन्द बँधी मुश्कों में पकड़े आये
दीवाने कहलाये

यारों का इक ग़ौल छनाछन जेबों को छनकाये
इन लोगों ने चाकरियों में सस्ते टके कमाये

1. आणविक, 2. कंधा, 3. गुप्त संकेत

'इन्शा' जैसे एक बार भटके तो हुए पराये
कोई न धोका खाये

नगर पराया, चेत महीना, सूनीरात, सराये
दीवारों पर मैले मैले फैले फैले साये
आने वाले कल का भरोसा दिन दिन उठता जाये
यारों कोई उपाय!
यारों कोई उपाय!!

(1952)

दिल-सी चीज़ के गाहक होंगे दो या एक हज़ार के बीच
'इन्शाजी' क्या माल लिये बैठे हो तुम बाज़ार के बीच
पीना पिलाना ऐन गुनह है, जी का लगाना ऐन हवस
आप की बातें सब सच्ची हैं लेकिन भरी बहार के बीच
ए सख़ियो ए ख़ुशनज़रो यक-गोना[1] करम ख़ैरात करो
ना' रा-ज़िनां[2] कुछ लोग फिरे हैं सुबह से शहरे-निगार के बीच
ख़ार व ख़स व ख़ाशाक[3] तू जानें, एक तुझी को ख़बर न मिले
ए गुले-ख़ूबी[4] हम तो अबस[5] बदनाम हुए गुलज़ार के बीच
मिन्नते-क़ासिद[6] कौन उठाए शिकवः ए-दरबां कौन करे
नामःए शौक़ ग़ज़ल की सूरत छपने को दो अख़बार के बीच
लोग हिलाले[7]-शाम से बढ़ कर पल में माहे-तमाम[8] हुए
हम हर बुर्ज में घटते घटते सुब्ह तलक गुमनाम हुए
उन लोगों की बात करो जो इश्क़ में ख़ुश अंजाम हुए
'नजद' में क़ैस[9] यहाँ पर 'इन्शा' ख़्वार हुए नाकाम हुए
किस का चमकता चेहरा लाएँ किस सूरज से माँगें धूप
घोर अँधेरा छा जाता है ख़ल्वते[10]-दिल में शाम हुए
एक से एक जुनूँ का मारा इस बस्ती में रहता है
एक हमीं हुश्यार थे यारो एक हमीं बदनाम हुए
शौक़ की आग नफ़स[11] की गर्मी घटते घटते सर्द न हो?
चाह की राह दिखा कर तुम तो वक़्फ़ दरीचः वबाम हुए
उन से बहार व बाग़ की बातें करके जी को दुखाना क्या
जिन को एक ज़माना गुज़रा कुन्जे-क़फ़स में राम हुए
'इन्शा' साहिब पौ फटती है तारे डूबे सुब्ह हुई
बात तुम्हारी मान के हम तो शब भर बेआराम हुए।

1. किसी क़दर, 2. फ़र्याद करने वाले, 3. काँटे फूस कूड़ा, 4. ख़ूबी वाले फूल, 5. बेकार, फ़ज़ूल, 6. सन्देशवाहक से अनुनय, 7. नया चाँद, 8. पूर्णिमा का चाँद, 9. मजनूँ, 10. एकान्त, 11. काम वासना

ग़ज़ल

हम रात बहुत रोये बहुत आह व फ़ुग़ां[1] की
दिल दर्द से बोझल हो तो फिर नींद कहाँ की

सर ज़ानू पे रखे हुए क्या सोच रही हो
कुछ बात समझती हो मुहब्बत ज़दगां[2] की?

तुम मेरी तरफ़ देख के चुप सी हो गयी थीं
वो साअते-ख़ुश[3] वक़्त निशात[4] गुज़रां की

इक दिन ये समझते थे कि पायाने-तमन्ना[5]
इक रात है महताब[6] के अय्यामे-जवां[7] की

अब और ही औक़ात है ए जाने-तमन्ना
हम नालः कुशां-ए-गुनहाँ, ग़मज़दगां की

इस घर की खुली छत पे चमकते हुए तारो
कहते हो कभी बात वहाँ जा के यहाँ की

बरगश्तः[8] हुआ हम से ये महताब तो प्यारो
बस बात सुनी राह चला काहकशां[9] की

अल्लाह करे 'मीर' का जन्नत में मकां हो
मर्हूम ने हर बात हमारी ही बयां की

पढ़ते हैं शब व रोज़ इसी शख़्स की ग़ज़लें
ग़ज़लें कि हिकायात हैं हम दिलज़दगां की

1. आर्तनाद, 2. प्रेम मारों की, 3. शुभ घड़ी, 4. ख़ुशी, 5. तमन्ना की इन्तिहा, 6. चाँद, 7. युवा दिन, 8. प्रतिकूल, 9. आकाशगंगा

तुम चर्ख़े-चहारम[1] के सितारे हुए लोगो
ताराज[2] करो ज़िंदगियाँ अहले-जहाँ की

अच्छा हमें बनते हुए मिटते हुए देखो
हम मौजे-गुरेज़ां[3] ही सही आबे-रवाँ की

'इन्शा' से मिला उस से न रोकेंगे वलेकिन
उस से ये मुलाक़ात निकाली है कहाँ की?

मशहूर है हर बज़्म में इस शख़्स का सौदा
बातें हैं बहुत शहर में बदनाम मियाँ की

ए दोस्तो ए दोस्तो ए दर्द नसीबो
गलियों में चलो सैर करें शहरे-बुताँ की

हम जायें किसी सम्त[4] किसी चौक पे ठहरें
कहियो न कोई बात किसी सूद व ज़ियाँ[5] की

'इन्शा' की ग़ज़ल सुन लो पे रन्जूर[6] न होना
दीवाना है दीवाने ने इक बात बयाँ की

होता है यही इश्क़ में हन्जार[7] सभी का
बातें यही देखी हैं मुहब्बतज़दगाँ की।

1. चौथा चक्कर, 2. बरबाद, 3. भागती हुई मौज, 4. दिशा, 5. नफ़ा-नुक़्सान, 6. दुःखी, 7. ढंग

और तो कोई बस न चलेगा हिज्र के दर्द के मारों का
सुब्ह का होना दूभर कर दें रस्ता रोक सितारों का

झूठे सिक्कों में भी उठा देते हैं ये अक्सर सच्चा माल
शक्लें देख के सौदे करना काम है इन बन्जारों का

अपनी ज़बाँ से कुछ न कहेंगे चुप ही रहेंगे आशिक़ लोग
तुम से तो इतना हो सकता है पूछो हाल बिचारों का

जिस जिप्सी का ज़िक्र है तुम से दिल को उसी की खोज रही
यूँ तो हमारे शहर में अक्सर मेला लगा निगारों[1] का

एक ज़रा सी बात थी जिस का चर्चा पहुँचा गली गली
हम गुमनामों ने फिर भी एहसान न माना यारों का

दर्द का कहना चीख़ ही उठो, दिल का कहना, वज़्अ[2] निभाओ
सब कुछ सहना चुप चुप रहना काम है इज़्ज़तदारों का

'इन्शाजी' अब अजनबियों में चैन से बाक़ी उम्र कटे
जिन की ख़ातिर बस्ती छोड़ी नाम न लो उन प्यारों का।

1. प्रेमिकाएँ, मूर्तियाँ, 2. रख रखाव, आचरण

पीत के रोगी सब कुछ बूझे सब कुछ जाने होते हैं
इन लोगों के ईंट न मारो कहाँ दीवाने होते हैं

आहें इन की उमड़ते बादल आँसू इनके अब्रे-मतीर[1]
दश्त[2] में इन को बाग़ लगाने शहर बसाने होते हैं

हम न कहेंगे आप हैं पीत के दुश्मन मन के कठोर मगर
आ मिलने के ना मिलने के लाख बहाने होते हैं

अपने से पहले दश्त में रहते कोह[3] से नहरें लाते थे
हम ने भी इश्क़ किया है लोगों सब अफ़साने होते हैं

'इन्शाजी' छब्बीस बरस के हो के ये बातें करते हो?
'इन्शाजी' इस उम्र के लोग तो बड़े सयाने होते हैं।

1. बरसने वाला बादल, 2. रेगिस्तान-जंगल, 3. पहाड़

ख़ूब हमारा साथ निभाया, बीच भँवर में छोड़ा हात[1]
हम को डुबो कर ख़ुद साहिल पर जा निकले हो-अच्छी बात

शाम से ले कर पौ फटने तक कितनी रुतें बदलती हैं
आस की कलियाँ यास[2] की पतझड़ सुबह के अश्कों की बरसात

अपना काम तो समझाना है ए दिल रिश्ते जोड़ कि तोड़
हिज्र की रातें लाखों करोड़ों, वस्ल के लम्हे पाँच कि सात

हम से हमारा इश्क़ न छीनो, हुस्न की हम को भीक न दो
तुम लोगों के दूर ठिकाने, हम लोगों की क्या औक़ात

रोग तुम्हारा और है 'इन्शा', बेदों[3] से क्यों चुहुल करो
दर्द के सौदे करने वाले, दर्द से पा सकते हैं नजात?

उनका दावा, उनकी अदालत और उन्हीं की ताज़ीरात[4]
उनका दोस्त ज़माना सारा, अपना दोस्त ख़ुदा की ज़ात

ए यारो इस फ़स्ल में अपना जोशे-जुनूँ रुस्वा न करो
गुलशन गुलशन ख़ाक उड़ती है फूल न ग़ुँचे डाल न पात

महर व मुरव्वत में वो हमारे पत्थर के बुत अच्छे थे
आये थे अब लौट चले हैं हज़रते-यज़दाँ[5] तस्लीमात[6]

आप ही आप पिटे जाते हैं अपने प्यादे अपने फ़ील[7]
हम क्यों खेलें इस बाज़ी में हाथ हमारे जीत न मात

हमने ये माना इक अंटी में यूसुफ़े-किन्आं[8] मिलता है
वक़्त के बोसीदा चर्ख़े पर उम्मीदों का सूत न कपास

'इन्शा' साहिब सुब्ह हुई है उठो भी अब कूच करो
इस मंज़िल पर क़ाफ़िले वाले रुकते हैं बस रात की रात

1. हाथ, 2. नैराश्य, 3. वैद्यों, 4. संहिताएँ, 5. अग्नि-पूजक प्राचीन ईरानियों का ख़ुदा, 6. प्रणाम, 7. हाथी, 8. फ़िलस्तीन के पैग़म्बर हज़रत यूसुफ़

सावन भादों साठ ही दिन हैं फिर वो रुत की बात कहाँ
अपने अश्क मुसल्सल[1] बरसें अपनी सी बरसात कहाँ

चाँद ने क्या क्या मंज़िल कर ली-निकला, चमका डूब गया
हम जो आँख झपक लें सो लें ए दिल हम को रात कहाँ

पीत का कारोबार बहुत है अब तो और भी फैल चला
और जो काम जहाँ के देखें फ़ुर्सत दें हालात कहां

क़ैस[2] का नाम सुना ही होगा हम से भी मुलाक़ात करो
इश्क़ व जुनूँ की मंज़िल मुश्किल सब की ये औक़ात कहाँ

1. निरन्तर, 2. मजनूँ

हम उन से अगर मिल बैठते हैं, क्या दोष हमारा होता है
कुछ अपनी जसारत[1] होती है, कुछ उनका इशारा होता है

कटने लगीं रातें आँखों में, देखा नहीं पलकों पर अक्सर?
या शामे-ग़रीबां का जुगनू, या सुब्ह का तारा होता है

हम दिल को लिए हर देस फिरे, इस जिन्स के गाहक मिल न सके
ए बन्जारो हम लोग चले, हम को तो ख़सारा[2] होता है

दफ़्तर से उठे कैफ़े में गये, कुछ शे'र कहे, कुछ कॉफ़ी पी ली
पूछो जो मआश[3] का 'इन्शाजी' यूं अपना औक़ात होता है।

1. साहस, 2. घाटा, 3. रोज़गार

ज़मीं पे सब्ज़ा[1] लहक रहा है, फ़लक[2] पे बादल धुआँ धुआँ है
मगर जो दिल के मिज़ाज पूछो, हमारे दिल का अजब समां है

दुरुने-सीना[3] ग़मे-जुदाई का दाग़ है और कहां कहां है
अगर यही बख़्ते-आशिक़ां[4] है फ़ुग़ां[5] है ऐ दोस्तो फ़ुग़ां है

ख़राब दिल की ख़राब बातें उदास दिन बे क़रार रातें
मैं तेरी मानिन्द वुस्अते-दहर[6] में अकेला सा फिर रहा हूँ
फ़ज़ा-ए-सेहरा के अब्रपारे[7] कहीं पे मंज़िले का भी निशां है

न क़ाफ़िला चाँद का हुवेदा[8], न मंज़िले-नूरे-सुब्ह पैदा
वही गुज़रगाहे-कहकशां है, वही ग़ुबारे-सितारगां है

न ऐसे आने की आर्ज़ू थी न ऐसे जाना हमारी ख़ू[9] थी
हमारे दिल की भी आबरू थी मगर वो पहला सा दिल कहाँ है

तुम इस पे हैरां हो ख़ुशख़यालो, पुराने वक़्तों के 'नजद[10]' वालो
वगरना हम को भी कुछ गुमाँ है, वगरना अपनी भी दास्ताँ है

न उनके चेहरे की धूप देखी न उनके आँचल की छाँव पाई
रुतों से महरूम जा रहे हैं अजब नसीबे-बलाकशां[11] है

तुम अपने 'इन्शा' की राह व मंज़िल को जानते हो फिर इससे मतलब
वो तनहा तनहा रवाँ दवाँ है कि हमरहे[12]-अहले-कारवाँ

1. हरियाली, 2. आकाश, 3. सीने के अन्दर, 4. आशिक़ों का भाग्य, 5. आर्तनाद, 6. दुनिया के फैलाव, 7. बादल के टुकड़े, 8. प्रकट, 9. स्वभाव, 10. अरब-प्रदेश, 11. आपत्तियाँ सहने वाले, 12. साथ

सानिहा[1] हम पे ये पहला है मिरी जाँ कोई?
ऐसे दामन से मिलाता है गिरेबाँ कोई?
'क़ैस'[2] साहिब का तो इस ग़म में अजब हाल हुआ
अपने रस्ते में न पड़ता हो बियाबां कोई
हमने अपने को बहुत देर सँभाला होता
आ ही निकले अगर आँसू सरे-मिज़्गां[3] कोई
यारो इस दर्दे-मुहब्बत की दवा बतलाओ
ढूँढ़ लेंगे ग़मे-दौरां का तो दर्मां[4] कोई
यक नज़र देखना, रम[5] करना, हवा हो जाना
उनसे छुटी है भला ख़ू-ए-ग़ज़ालां[6] कोई
हम किसी सम्त[7] भी निकले हों वहीं जा निकलें
हम से भूली है रहे-कूच-ए जानां कोई
"अब तिरी याद में रोएँगे न हैरां होंगे"
उन से पैमां है कोई, दिल से है पैमां कोई
सूनी रातों में सरे-बिस्तरे-ख़्वाबे-राहत
बैठा रहता है किसी बात पे गिर्यां[8] कोई
भीगी शामों में खुले सेहन में तनहा तनहा
बेक़रार न ही देखा है ख़िरामां[9] कोई
दोस्तो दोस्तो इस शख़्स को जाकर समझाओ
अपने 'इन्शा' के सँभलने का भी सामां कोई
ये भी हम लोगों की वहशत[10] वे हँसा करता था
आया इस ख़ाना-ए-वीरां[11] में भी मेहमां कोई

---

1. दुर्घटना, विपत्ति, 2. मजनूं, 3. पलकें, 4. इलाज, 5. भगदड, 6. हिरनों की प्रकृति, 7. दिशा 8. रुदन 9. धीमी चाल, 10. दीवानगी 11. वीरानघर

यूँ तो है वहशत ज़ुज़्व[1]-ए-तबीअत, रब्त[2] उन्हें कम लोगों से
अब तो बरस दिन बाद भी 'इन्शा' मिलते नहीं हम लोगों से
क्यों तुझे ज़िद है वज्अ[3] निभाएँ, चाँद न देखें ईद करें
छुप न सकेगा ए दिले-बियां[4] दीः ए-पुरनम[5] लोगों से
क्या हुआ ख़िश्त[6] उठा दे मारी या सरे-दामन नोच लिया
तुम तो दीवाने उसके बहाने हो चले बरहम[7] लोगों से
इश्क़ करें तो जुनूँ की तुहमत, दूर रहें तो तू नाराज़
अब ये बता हम तुझ से निभाएँ या दिले-महरम[8] लोगों से

हम जंगल के जोगी हम को एक जगह आराम कहाँ आज
यहाँ कल और नगर में सुब्ह कहाँ और शाम कहाँ
हम से भी पीत की बात करो कुछ, हम से भी लोगो प्यार करो
तुम तो पशेमां[9] हो भी सकोगे हम को यहाँ पे दवाम[10] कहाँ
साँझ समै कुछ तारे निकले पल भर चमके डूब गये
अम्बर अम्बर ढूँढ़ रहा है अब उन्हें माहे-तमाम[11] कहाँ
दिल पे जो बीते सह लेते हैं अपनी ज़बाँ में कह लेते हैं
'इन्शाजी' हम लोग कहाँ और 'मीर'[12] का रंगे-कलाम कहाँ

---

1. अंश, 2. सम्बद्धता, 3. रखरखाव, 4. जला हुआ दिल, 5. भीगी आँखें, 6. ईंट, 7. नाराज़, 8. जिनसे वैवाहिक सम्बन्ध न हो सके, 9. शर्मिन्दा, 10. स्थायित्व, 11. पूर्णिमा का चाँद, 12. शाइर मीर तक़ी

हमें तुम पे गुमाने-वहशत था हम लोगों को रुस्वा किया तुमने
अभी फ़स्ल गुलों की नहीं गुज़री, क्यों दामने-चाक सिया तुमने
इस शहर के लोग बड़े ही सख़ी, बड़ा मान करें दरवेशों का
पर तुम से तो इतने बरहम[1] हैं, क्या आन के माँग लिया तुमने
किन राहों से हो कर आयी हो, किस गुल का सन्देसा लायी हो
हम बाग़ में ख़ुश-ख़ुश बैठे थे क्या कर दिया आके सबा[2] तुमने
ग़मे-इश्क़ में कारी[3] दो ना दुआ, ये है रोग कठिन ये है दर्द बुरा
हम करते जो अपने से हो सकता, कभी हम से भी कुछ न कहा तुमने
वो जो क़ैस ग़रीब थे उनका जुनूँ सभी कहते हैं, हम से रहा है फ़ुज़ूँ[4]
हमें देख के हँस तो दिया तुमने, कभी देखे हैं अहले-वफ़ा तुमने?
अब रहरवे-मांदा[5] से कुछ न कहो, यूँ ही शाद[6] रहो आबाद रहो
बड़ी देर से याद किया तुमने, बड़ी दूर से दी है सदा तुमने
इक बात कहेंगे 'इन्शाजी' तुम्हें रेख़्ता[7] कहते उम्र हुई
तुम एक जहान का इल्म पढ़े, कोई 'मीर'-सा शे'र कहा तुमने?

1. रुष्ट, 2. पूर्वाहवा, 3. भरापूरा, 4. प्रचुर, 5. थका हुआ राही, 6. प्रसन्न, 7. प्राचीन उर्दू का नाम

जंगल जंगल शौक़ से घूमो, दश्त की सैर मुदाम[1] करो
'इन्शाजी' हम पास भी लेकिन रात क़ी रात क़याम[2] करो
अशकों से अपने दिल की हिकायत दामन पर इर्क़ाम[3] करो
इश्क़ में ब यही काम है यार वले कि ख़ुदा का नाम करो
कब से खड़े हैं बर[4]में ख़िराजे-इश्क़ लिए सरे-राहगुज़ार
एक नज़र से सादा-रुख़ों हम सादा दिलों को ग़ुलाम करो
दिल की मताअ[5] तो लूट रहे हो हुस्न की दी है ज़कात कभी?
रोज़े-हिसाब क़रीब है लोगो कुछ तो सवाब[7] का काम करो
'मीर' से बैअत[8] की है तो 'इन्शा' मीर की तब्अत[9] भी है ज़रूर
शाम को रो रो सुब्ह करो अब, सुब्ह को रो रो शाम करो

दिल किस के तसव्वुर में जाने रातों को परेशां होता है
ये हुस्ने-तलब की बात नहीं, होता है मिरी जां होता है
हम तेरी सिखाई मन्तिक़[10] से अपने को समझा लेते हैं
इक ख़ार[11] खटकता रहता है सीने में, जो पिन्हां[12] होता है
फिर उनकी गली में पहुँचेगा, फिर सह्व[13] का सज्दा करेगा
इस दिल पे भरोसा कौन करे, हर रोज़ मुसलमां होता है
वो दर्द कि उसने छीन लिया, वो दर्द कि उसकी बख़्शिश था
तनहाई की रातों में 'इन्शा' अब भी मिरा मेहमां होता है।

1. नित्य, 2. ठहराव, 3. लिखना, 4. सीना, 5. पूँजी, 6. दान, 7. पुण्य, 8. मुरीद बनना, 9. पैरवी, 10. तर्क, 11. काँटा, 12. छुपा हुआ, 13. भूल सुधार

दिल का था चाक मगर पहुँचाया, ता बः गिर्यां[1] 'इन्शा' ने
दश्त[2] में जा इक शह्र बसाया बे सरो-सामां इन्शा ने
क़ैस की सुन्नत[3] 'नजदे'- वफ़ा में फिर उस शख़्स ने ज़िंदा की
हम को भी पहले यक़ीं नहीं आया 'इन्शा' ने हाँ इन्शां ने
फिर कोई याद पुरानी जागी, फिर किसी दर्द ने चुटकी ली
फिर हमें दीवाने ने बुलाया चलते हैं यारां (इन्शा ने)
एक से एक अनोखा तीखा दुनिया में ग़म तो हज़ारों थे
क्यों तुझे तनहा जी में बसाया ए ग़मे-जानां इन्शा ने
अहलन व सहलन[4] तेरे जिलौ[5] में आता है जो कुछ आने दे
इश्क़ को है अब ढाल बनाया गर्दिश-दौरां इन्शा ने
दिल के सँभलने की कोई सूरत लाज़िम है, यहाँ कुछ भी नहीं
अपने को जब से ये रोग लगाया कर लिया हैरां इन्शा ने
अब उसे दुनिया वहशी व रुस्वा ख़्वार व परेशां कुछ भी कहे
इश्क़ किया और करके निभाया इश्क़ के शायां[6] इन्शा ने

1. विलाप तक, 2. जंगल, रेगिस्तान, 3. दस्तूर, 4. हाल पूछना, 5. साथ, 6. समुचित

पीत करना तो हम से निभाना सजन, हम ने पहले ही दिन था कहा ना सजन
तुम ही मजबूर हो, हम ही मुख़्तार हैं, ख़ैर माना सजन ये भी माना सजन
अब जो होने के क़िस्से सभी हो चुके, तुम हमें खो चुके हम तुम्हें खो चुके
आगे दिल की न बातों में आना सजन, कि ये दिल है सदा का दीवाना सजन
ये भी सच है न कुछ बात जी की बनी, सूनी रातों देखा किये चाँदनी
पर ये सौदा है हम को पुराना सजन, और जीने का अपने बहाना सजन?
शह्र के लोग अच्छे हैं हमदर्द हैं, पर हमारी सुनो हम जहाँगर्द हैं
दाग़े-दिल न किसी को दिखाना सजन, ये ज़माना नहीं वो ज़माना सजन
उसको मुद्दत हुई सब्र करते हुए, आज कू-ए-वफ़ा[1]से गुज़रते हुए
पूछ कर उस गदा[2] का ठिकाना सजन, अपने 'इन्शा' को भी देख आना सजन

1. वफ़ा की गली, 2. फ़क़ीर

कभी उनके मिलन की आशा ने इक जोत जगा दी थी मन में
अब मन का उजाला सँवलाया फिर शाम है मन के आँगन में
जी घुलता है आँसू ढलते हैं हर नीर में दीप से जलते हैं
इस बरखा से जी की आग बुझे ये तो और भी भड़के सावन में
चलो 'इन्शा' के पास चलें बैठें सुनें गीत मनोहर प्रेम भरे
जिन्हें सुन लें तो मन को मसोस मरें सभी गोपियाँ गोकुल के बन में
ये छैल छबीला कौन फिरे इस मथुरा की नगरी में सखियो
सभी बातें कि अपने श्याम में थीं अब देख लो इस मनमोहन को।

सभी बोल मधुर सभी नैन सजल, किन गलियों में तुम हमें ले आये
इस मन को न लोगो भटकाओ, ये मन है किसी के बन्धन में
इस शक्ल का रूप नहीं होता, हर रूप को नाम नहीं देते
कुछ शक्लें हैं अपनी आँखों में, कुछ रूप हैं मन के दरपन में
कभी मन की अजन्ता में आओ, वो मूरतें तुम को दिखलाएँ
वो सूरतें तुम को दिखलाएँ, हम खो गये जिनके दर्शन में
हर एक पे नज़रें उठती थीं, हर एक पे जी को मचलना था
इस शह्र में रूप का काल नहीं, कुछ और है अपने साजन में
या बन में चिकारे मिलते है, या पीत के मारे मिलते हैं
कुछ पूरब में, कुछ पच्छिम में, कुछ उत्तर में, कुछ दक्खिन में
शहरों में फिरे संन्यास लिए, जनता को जगत भगवान कहे
'इन्शा' सा कोई रमता देखा? कहने को हैं जोगी हर बन में
किस वास्ते ठेठ बने रहिए, ज़रा रंग बदल के ग़ज़ल कहिए
ये जो उर्दू ज़ुबान हमारी है सौ रंग हैं इस के दामन में
उस हुस्न के नाम पे याद आये सब मन्ज़र[1] 'फ़ैज़'[2] की नज़्मों के
वही रंगे-हिना[3], वही बंदे-क़बा[4], वही फूल खिले पैराहन[5] में
कुछ वो जिन्हें हम से निस्बत[6] थी इन कूचों में आन आबाद हुए
कुछ अर्श[7] पे तारे कहलाए, कुछ फूल बने, जा गुलशन में
हम लोगों के आने से पहले भी तुम लोग उधर से गुजरते थे
कभी फूल भी देखे गुफ़ों[8] में, कभी कौसे-कुज़ह[9] किसी चिलमन में?
यूँ करने को इश्क़ पे क़ैद नहीं, सब करते हैं अच्छा करते हैं
पर हमसे बहुत भी नहीं गुज़रे..कुछ लोग थे मिस्र व मदाइन[10] में
हम उन से जो मिल कर दूर हुए, कुछ खुश हुए, कुछ रंजूर हुए

1. दृश्य, 2. शाइर-फ़ैज़ अहमद फ़ैज, 3. मेहंदी, 4. लम्बे अँगरखे की गिरह, 5. लिबास, 6. सम्बन्ध, 7. सब आस्मानों के ऊपर स्थित, 8. झरोखे, 9. इन्द्रधनुष, 10. शहरों में

अब दिल का ठिकाना मुश्किल है हाँ जान रहेगी ऐमन[1] में
तुम लोगों ने चाँद बुझा डाला, शबे-माह का लुत्फ़ गँवा डाला
अब लाख चराग़ जलाते फिरो, रास्ते पर हर रोज़न[2] में
कभी 'मीर' फ़क़ीर की बेतों[3] से, कभी ग़ज़लों से 'इन्शा' साहब की
इन बिरह की बेकल रातों में हम जोत जगाते हैं मन में।

1. बेख़ौफ, 2. सूराख़, 3. मिस्रों

तवील नज़्में

बग़दाद की एक रात

सिंदबाद आज तू हमराह मुझे भी ले चल
दिल जो बहला तो ख़यालों ही में अपना बहला
मैं तिरे साथ ज़माने की नज़र से ओझल
ले के चलता हूँ ख़यालों का सफ़ीना[1] अपना
जा ही निकलेंगे किसी शहर में हम आज न कल

शोर व गुल शहर का मद्धम हुआ, फिर डूब गया
आज बस्ती से बहुत दूर निकल आया हूँ
ज़ुल्मते-शाम ने धुँधला दिये दश्त व दर्या
सोचता हूँ कि सराय को अभी लौट चलूँ

या इसी साहते-वीरां[2] के किसी गोशे[3] में
सर्द बालू को बनाये हुए बिस्तर अपना
आज की रात गुज़ारूँ कहीं बैठे बैठे
शहर व सेहरा में मुसाफ़िर के लिए फ़र्क़ ही क्या?

ख़्वाब आलूद दजला[4] के सवाहिल[5] का जहाँ
फैल जाते हैं पुर अस्रार[6] धुँधलके हर सू[7]
ख़ुनुकियाँ[8] वुस्अते-सेहरा[9] में हुई बाले-फ़िशां[10]
सौंधी सौंधी सी ये आती है कहाँ से ख़ुशबू

1. नाव, 2. शाम का अँधेरा, 3. वीरान विस्तार, कोना 4. इराक़ की नदी 5. साहिलों, 6. मर्म, भेद 7. ओर, 8. ठंडकें, 9. रेगिस्तान का फैलाव, 10. पर फैलाए हुए

सत्हे-दजला पे गुफ़ा[1] कोई महिला[2] कोई
शाम की धुन्ध में लिपटा हुआ हौले हौले
शह्र की सम्त[3] बढ़ जाता है लेकिन चुपचाप
जैसे ख़ामोशी सेहरा से उलझने से डरे

परले साहिल पे मछेरों की किसी बस्ती में
जागते जाते हैं मिट्टी के तनिक ताब दिये
कोई दम जाग के थक जाएँगे, सो जाएँगे
कौन इस रात को पायाने-सहर[4] तक पहुँचाए

ज़र्द[5] रू चाँद थे हारे मुसाफ़िर की तरह
मंज़िले-दूर की राहों के तसव्वुर से उदास
मत्ल-ए-शिर्क़[6] से उभरा है परेशां हैरां
दश्ते-वीरां में खजूरों के किसी झुण्ड के पास

और किसी मर्कद बशिकस्तः[7] के गुम्बद में कहीं
दोश व इमरोज़[8] की गर्दिश का सताया हुआ बूम[9]
आले-बरमक बनी अब्बास[10] के नोहे[11] गाता
यक बयक[12] किसलिए चुप हो गया, किस को मालूम

इक अजब कैफ़ियते-ख़्वाब मुसल्लत[13] है यहाँ
शोरे-मातम है किसी सम्त न शादी का ख़रोश[14]
अपनी दुनिया-ए-कशाकश[15] को मयस्सर हैं कहाँ
ख़ुनुकी शाम में भीगे हुए लम्हात-ए-ख़मोश

दिन मशक़्क़त में कटें, रातें सितारे गिनते
सुब्हें आयें ग़मे-ताज़ा के संदेस ले कर
रूह बे महरी-ए-औक़ात[16] का महवर[17] ही रहे
जाने कब तक है यही सिलसिलः ए-शाम व सहर

शाहज़ादों ही की जागीर हैं सारे इन्आम

1. एक गोल कश्ती जो हज़ारों बरसों से दजला में चली आयी है, 2. लम्बी व नुकीली, 3. ओर, 4. सुबह के छोर तक, 5. पीला, 6. पूर्वांचल, 7. जर्जर समाधि भवन, 8. गुज़री रात का आज, 9. उल्लू, 10. बरमक व अब्बास वंशज, 11. शोक गीत 12. अकस्मात्, 13. आच्छादित, 14. शोरगुल, 15. संघर्ष, 16. निर्दय समय, 17. केन्द्र

अपनी क़िस्मत है फ़क़त ख़ार कशी महरूमी
कुछ इसी दौर मे देखा है ये रंगे अय्याम[1]
ज़िन्दगी पहले ज़मानों में तो दुश्वार न थी
हाय क्या दिन थे, मयस्सर था हर इंसां को फ़राग़[2]
लोग बा शौकते-शाहाना जीया करते थे
सब जेबों में हुआ करते थे जादू के चराग़
जिन्न सभी काम सर अंजाम दिया करते थे

हुक्म मिलते ही बना देते थे बिगड़ी हुई बात
ऐशे-जावेद[3] में आने नहीं पाता था ख़लल
ला के पहलू में बिछा देते थे महबूब की सेज
रात की रात में चुन देते थे मरमर के महल

खिज्र[4] व इल्यास[5] ख़लाओं[6] से टपक पड़ते थे
आया करता था कड़ा वक़्त किसी पर जो कभी
जी में आयी तो हुए दीदः ए-हैरां से अलोप
सैर की शहपरे-शह रुख़[7] पे ज़माने भर की

पेट भूका था कोई और न बरहना[8] कोई जिस्म
किसको मज़दूरी व मेहनत की परेशानी थी
क़ाज़ी ई हमः हाजात[9] था सिमसिम का तिलिस्म
बाद आवर्द ख़ज़ानों[10] की फ़िरावानी[11] थी

हमने देखा है मछेरों ने जो डाला कभी जाल
'दजला' से अहदे-सुलेमां[12] के ख़ज़ीने[13] निकले
अपनी तक़दीर पे कोरा न भरोसे के तुफ़ैल[14]
कितने हब्बाल[15] सरे-बाम अमारत[16] पहुँचे

देखते देखते इफ़्लास[17] लकड़हारों का

1. दिनों के रंग, 2. फ़ुर्सत, 3. हमेशा का ऐश, 4. मार्गदृष्टा, 5. समुद्रों के संरक्षक अमर पैगम्बर, 6. शून्यों, 7. शहरुख़ के बड़े पर, 8. नग्न, 9. नित्य हालत पूरी करने वाला न्यायप्रिय, 10. खुले ख़ज़ाने, 11. प्रचुरता, 12. पैगम्बर सुलेमान का काल, 13. ख़ज़ाने, 14. बदौलत, 15. हसन हब्बास का क़िस्सा अलिफ़ लैला के किस्सों में मशहूर हैं, 16. छत के ऊपर निशान, 17. कंगाली

शौकत व शाने-विज़ारत[1] में बदल जाता था
इस्मे-आ' ज़म[2] की करामत थी जहाँगीर ऐसी
सायः इदबार[3] का इक आन में टल जाता था

शहर में आये गजर दम जो मुसाफ़िर कोई
लोग उसे शहर का सुल्तान बना लेते थे
ताज रखते थे सरे-फ़र्क़[4] बसद अजज़ व नियाज़[5]
अपना आक़ा बा दिल व जान बना लेते थे

बादशः ज़ादियाँ क़दमों में बिछी रहती थीं
दूर-अज़-दस्त न थे क़ाफ़[6] की हूरों के परें
अपने महलों में छुपा लेती थीं लाकर परियाँ
इब्ने-आदम[7] जो अकेले में कहीं मिल जाये

अपना ये आलम-ए-बेरंग भी आलम है कोई?
आओ कुछ देर इन्हीं ख़्वाबों के जज़ीरों[8] में चलें
ढूँढ़ें बग़दाद-ए-कुहन साल[9] की गलियों में सुकूँ
अर्ज़े-अफ़साना[10] पे जादू के खटोले में उड़ें

1. मंत्री की अल्पता, 2. महामंत्र, 3. दरिद्रता, 4. सर पर, 5. अनुनय घटित, 6. काकेशिया, 7. आदम का बेटा, 8. द्वीप, 9. प्राचीन बग़दाद, 10. कथा-भूमि

(2)

कितनी शब बीत गयी 'दजला' की साकिन[1] मौजो
आधी बजती है कि है पिछले पहर का हंगाम
कुश्ते-अंजुम[2] से गुज़रता हुआ मग़रिब की तरफ़
मंज़िलें तय किये जाता है मह-ए-सुस्त ख़िराम[3]

चादरे-ख़्वाब में लिपटा है जहाने-मौजूद
अलिफ़ लैला के फ़सानों का जहाँ[4] है आबाद
शह्रे-रोमान के हंगामों का आलम है वही
फिर वही शोरे-ख़्लाइक़[5] है बसूक़ व बज़ार[6]

फिर इन्हीं रिंदों[7] के झुरमुट हैं ख़राबात[8] के गिर्द
कुहना हुजरों[9] में खनकते हैं वही जाम व सुबू[10]
क़िस्रे-शाही[11] के झरोकों में परेशां है उधर
माह-रूख़सार कनीज़ों के घनेरे गैसू

शोरे-नग़मः है ज़ुबैदा[12] के शबिस्तां[13] में बन्द
ऊद व अन्बर[14] का ता त्तुर[15] है फ़ज़ा में सारी
सूने ऐवानों[16] में पायल के छनाके गूँजे
छम छमा छम, छमा छम, रक़्स[17] हुआ है जारी

लो कोई ग़ैरते-नाहीद[18] क़यामत बर-दोश[19]
अपना सरमायः ए'जाज़[20] समेटे आयी
(साज बेदार हुए झाँझ ने पहलू बदले)

1. स्थिर, 2. तारों का हुजूम, 3. धीमी गति का चाँद, 4. संसार, 5. जन साधारण, 6. बज़ारों में, 7. शराबियों, 8. मदिरालय, 9. पुरानी कोठरियाँ, 10. प्याले व घड़े, 11. शाही महल, 12. इराक़ के ख़लीफ़ा हारुन रशीद की पत्नी, 13. शयनकक्ष, 14. अगरबत्तियाँ, 15.ख़ुशबू, 16. महल, 17. नृत्य, 18. शुक्र ग्रह का अभिमान, 19. कन्धे पर, 20. चमत्कार की पूँजी

और मुग़न्नी[1] ने ग़ज़ल धीमे सुरों में छेड़ी

ए दिल अंदेशा-ए-आलाम[2] न कर आज की रात
उनकी चितवन के इशारे हैं इधर आज की रात
देखना है शबे-इश्रत की निहायत क्या है
बज़्म उठती है कि होती है सहर आज की रात
ऐसे आलम में क़यामत का न छेड़ो मज़कूर[3]
क़द्रे-ईमान समझते हैं मगर आज की रात
ज़ाहिदो[4] जाम पीयो, ख़ुल्द[5] की हस्रत छोड़ो
सक़ियो इन पे भी एहसां की नज़र आज की रात
दिल को बरमाओ सितारों पे कमंदें डालो
रक़्स फ़र्माओ बअंदाज़े-दिगर आज की रात

रुक गयी गीत की लय, थम गयी पायल की छनक
रक़्से-पैमाना व मीना की हुई तैयारी
इक तरफ़ ग़र्के-मै'नाब[6] हुए जिल्लुलाह[7]
मायः होश[8] उधर हार गये दरबारी

और ड्योढ़ी पे खड़ा एक ग़ुलामे-ज़ंगी[9]
अपनी दुनिया-ए-तसव्वुर में कहीं खोया गया
आहें भरने लगा उमड़े हुए आँसू रोके
बैठे बैठे उसे क्या जानिए क्या याद आया

उसके ख़्वाबों की सियाहः चेहरा परी रहती है
अर्ज़े-तारीके - हबश[10] की किसी वादी में कहीं
उड़ के जाये उसे सीने से लगा ले लेकिन
आज इक जिन्से-तिजारत है ये इन्सां तो नहीं

ये भी दुनिया है वही, आओ कहीं और चलें
आये थे हम तो इसी दर्द से डरते बचते
सिसकियाँ गीत की लय से हैं गुलोगीर[11] यहाँ

---

1. गाने वाली (गायिका), 2. दुखों की शंका, 3. जिक्र, 4. परहेज़गार, 5. जन्नत, 6. शराब पीने में ग़र्क, 7. शासक-जिस पर ईश्वर की छाया हो, 8. धनी, 9. फ़िलस्तीनी शासक ज़ंगी का गुलाम, 10. अफ़्रीक़ी प्रदेश हबश की अँधेरी भूमि, 11. भर्रायी हुई

गर्म अश्कों में शराबोर हैं रा'ना[1] चेहरे

कौन बैठा है वो देखें तो सरे-राहगुज़र
है इसी शह्र का बासी कि मुसाफ़िर कोई
अपने वा'दे को निभाएगी कोई महरनिगाह[2]
किस की रह देख रहा है ज़रा पूछें तो सही

अबुल हसन नाम का अपना ये वही दोस्त न हो
आ निकलता था जो हर शाम सरे-राहगुज़र
जुस्तजू दिल में किसी अजनबी मेहमां के लिए
उसकी ये वज़्अ मुअय्यन[3] थी ख़ज़ां हो कि बहार

भेस में ताजिरे-मोसिल[4] के ख़लीफ़ा हारूँ
एक शब इस के शबिस्ताँ[5] में जो आ कर ठहरा
खा के यक रोज़ा ख़िलाफ़त का फ़रेबे-सिमीं[6]
ये बिचारा किसी महबस[7] में नज़र आया था

देखना ज़िल्ले-इलाही[8] की सवारी आयी
रास्ता छोड़ो कि सुल्ताने-जहाँ आते हैं
साथ लश्कर है नदीमों[9] का ख़िरामां बा अदब
सर पे ताऊस[10] व हुमा[11] सायः कुना[12] आते हैं

धूल मिट्टी में सने कीड़ो मकौड़ो दो रस्ता
बंदगी पेशा ग़ुलामों की गर्द हो छट जाओ
अपनी मनहूस जबीनों[13] को छुपा लो फ़ौरन
शाहे-दौरां की निगाहों से परे हट जाओ

दूर वादी में नज़र आती है ऊँचे-ऊँचे
सब्ज़ परियों के मुहल्लात की धुँधली-सी क़तार
आओ कुछ देर वहीं चल के ज़रा सुस्ता लें
कुछ तो हो ख़ातिरे-दरमांदा[14] को सामां क़रार

---

1. सुन्दर, 2. प्यार करने वाली, 3. निश्चित, 4. मोसिल्ला के व्यापारी, 5. शयनकक्ष, 6. जगमगाता फ़रेब, 7. क़ैदखाना, 8. अच्छा शासक, 9. साथियों, 10. मोर, 11. कल्पित पक्षी जिसकी छाया से व्यक्ति राजा बन जाता है, 12. आच्छादित, 13. माथों, 14.दुखी

शहरे-मस्हूर[1] न पड़ता हो मगर रस्ते में
जिस के बाज़ार हैं ख़मोश बहाइम[2] से पटे
एक दिन ये सभी इन्सान थे मगर आज नहीं
किस में हिम्मत है कि इस सहरे-गिरां[3] को तोड़े

कितने महपारों के झुरमुट हैं हरम की रौनक़
सजते हैं चाँद से जिस्मों पे मुरस्सा[4] गहने
जमा हैं ख़िदमते-अक़्दस में नवादिर[5] क्या क्या
ज़िल्ले सुब्हानी की सतूत[6] के तो फिर क्या कहने

चीख़ किस की ये सरे-बामे-फ़लक जा पहुँची
कौन बरसों की तमन्ना से लिपट कर रोया
पहलू-ए-शाह में किस किस का जिगर गोशा[7] है
कितने कुटियाएँ उजड़ कर हरम आबाद हुआ

दर्द ख़्वाबीदा की टीसें भी तो जाग उठती हैं
इश्रते-ए-रूह का सामाँ नज़र आता है जहाँ
एक काँटा भी तो चुभ जाता है चुपके से कहीं
फूल नक्हत बगिरेबां[8] नज़र आता है जहाँ

शह्रे-रोमान पे छाया है वही रंगे-मलाल
जिस से इन्सां को मफ़र[9] आलमे-इम्कां में नहीं
सिंदबाद आये, मगर सख़्ती-ए-तूफ़ां के सताये
तस्मा पाँव[10] की असीरी[11] में दिल अफ़गार[12] व ग़मीं

किस की महफ़िल में ये ले आयी है अब के उफ़्ताद[13]
बज़्म हारों तो नहीं हाजिबे[14]-दर से पूछें
हर कोई उठ के सुनाता है कहानी अपनी
हम भी इस हलक़े में चल के ज़रा बैठें देखें

---

1. मंत्रमुग्ध, 2. मवेशी, 3. घना जादू, 4. जड़ाऊ, 5. दुर्लभ वस्तुएँ, 6. रौब, 7. जिगर का टुकड़ा, 8. गिरेबान में ख़ुशबू, 9. बचाव, 10. जूते का फ़ीता, 11. क़ैद, 12. घायल, 13. विपत्ति, 14. द्वारपाल

"ज़िल्ले सुब्हानी तिरा मर्तबा क़ायम दायम"
तुझको अल्लाह सुलेमां का मन्सब बख़्शे[1]
मैं भी इस शहर के बाज़ारों में नौवारिद[2] हूँ
मेरी बारी है तू मेरी भी हिकायत सुन ले

मैं किसी शहर का ताजिर हूँ न वाली न वज़ीर
न किसी शाहे-मुआसिर[3] का जिगरगोशा हूँ
न किसी बादशाहज़ादी की मुहब्बत का असीर
सर में सौदा -ए-रियासत, न इमारत[4] का जुनूँ

मैं हूँ दहक़ान[5] जो खेतों में उगाता है अनाज
फ़स्ल पकने पे समझता है कि मेहनत बर आयी
ये मगर तेरा, कहें तेरे पियादों का ख़िराज
मैं जो खलियान से दामन लिए उट्ठा ख़ाली

आज मज़दूर हूँ इक तेल के मिल का मज़दूर
और इस जहदे-[6] शब व रोज़ से पाया क्या है
ख़ुद तही-दस्त[7] हूँ, ख़्वाजा[8] के ख़ज़ाने भरपूर
अब मैं ये पूछने आया हूँ-ये दुनिया क्या है

क्या मुझे पर्च'म-कावः[9] लिए आना होगा
क्या तभी होश में आएगी ख़िलाफ़त[10] तेरी
क्यों तिरी बज़्म हुई जाती है दरहम बरहम[11]
ज़िल्ले-सुब्हानी मिरी बात तो सुन ली होती

नर्म बालू का बिछौना है ख़ुनुक[12] और मर्तूब[13]
चाँद मग़रिब[14] में बहुत दूर कहीं जा पहुँचा
सत्हे-दजला पे गुफ़ा है न महिला कोई
नोहा ख़्वाँ बूम भी मुद्दत हुई ख़ामोश हुआ

---

1. ओहदा, 2. नवागन्तुक, 3. समकालीन, 4. हुकूमत, 5. कृषक, 6. परिश्रम, 7. ख़ाली हाथ, 8. आक़ा, 9. एक ईरानी लोहार, जिसने अपनी धौंकनी के पर्चम तले लश्कर जमा किया था, 10. नेतृत्व, 11. अस्त-व्यस्त, 12. शीतल, 13. सुगन्धित, 14. पश्चिम

घंटियाँ बजती हैं, गर्द उड़ती है, शोर उठता है
कारवां मौसिल व शीराज़[1] के आते होंगे
'मशहद' व 'यज़द' व 'सफ़ाहां' के अमीरों के सफ़ीर[2]
तुहफे हर मुल्क के हर देस के लाते होंगे

या हलाकू के असाकिर[3] का हिरावल होगा
जिस ने तस्ख़ीरे-मुमालिक[4] के अज़ाइम[5] लेकर
आज बग़दाद के ऐवानों को ताका होगा
अब कोई दम में हुआ जाता है सब ज़ेरो-ज़बर[6]

क्या मगर इससे बदल जाएँगे अपने अय्याम
हों वो मोतसिम व हारूँ कि हलाकू कोई
जब तक इस नहज[7] पे चलता है ज़माने का निज़ाम
कौन कहता है बदल सकती है क़िस्मत अपनी

कोई मौहूम[8] सी आस आस पे कब तक जी ले
ठहरो अब कोई फ़िरस्तादा-ए-ग़ैब[9]-आएगा
आके तोड़ेगा वो इफ़लास[10] के ग़म के बन्धन
पर जो मेहदी की बजाय वो हलाकू निकला

इब्ने आदम का जहाँ-दर्दे-अज़ल का महवर[11]
कैदे-ग़म से कभी आज़ाद भी होगा कि नहीं
हस्रतें दिल में पले जाएँगी कब तक आख़िर
ये ख़राबा[12] कभी आबाद भी होगा कि नहीं

1. क्रमशः ईराक़ व ईरान के शहर, 2. राजदूत, 3. लश्कर, 4. देशों पर विजय, 5. संकल्प, 6. उलट-पुलट, 7. ढंग; 8. भ्रममूलक, 9. गोपनीय भेजा हुआ, 10. निर्धनता, 11. नित्य दर्द की धुरी, 12. निर्जनस्थल

(3)

अब तो लो पौ भी फटी, नूर का तड़का भी हुआ
(और मैं अब तक यहीं बैठा हूँ, ये आलम क्या है?)
रात के आख़िरी तारों का विदा-ए-ख़ामोश
सुब्हे-ताज़ा की विलादत[1] का पता देता है

और किसी पास की बस्ती में मो'ज़्ज़िन[2] कोई
अहले-ईमां को बुलाता है जमाअत के लिए
उसकी आवाज़ का ये सेहरे-तरन्नुम, ये गुदाज़
दिल से कहता है यहाँ से न उठाओ डेरे

दूर इक रेल के इंजन की परेशां सीटी
चीख़ उठी है कि ता'तील[3] के दिन ख़त्म हुए
आज ही रख़्ते-सफ़र[4] बाँध के जाना होगा
मुन्तज़िर[5] बैठे हैं करकूक[6] में अफ़सर मेरे

फिर वही सर-फलक[7] दूदकशों[8] की दुनिया
फिर वही तेल के चश्मों[9] की फ़ज़ा-ए-बू दार
फिर वही सिलसिलः ए-जहदे-गिरां[10], मुज़्दे-क़लील[11]
और वही महल में ख़्वाजा के तिला[12] के अम्बार

और ये ख़्वाजा कहीं अफ़रिंगी, कहीं अमेरिकी
जिस की सद रंग सियासत का तिलिस्मे-सिमीं
तस्मा-पा[13] बन के है मश्रिक़[14] की फ़ज़ाओं पे सवार

1. जन्म, 2. अज़ान देने वाला, 3. छुट्टी, 4. यात्रा सामग्री, 5. प्रतीक्षारत, 6. इराक़ में तेल का मशहूर केन्द्र, 7. गगनचुम्बी, 8. चिमनियाँ, 9. कुएँ, 10. भारी परिश्रम, 11. अल्प शुभ समाचार, 12. सोना, 13. पाँव के कस्से, 14. पूर्व

कब तक इस सेहर[1] का मा'मूल[2] रहेगी ये ज़मीं

शह्रज़ादों के तख़य्युल[3] का वो बग़दाद कहाँ
नफ़्त व रौग़न[4] की सियासत है फ़ज़ाओं में रची
भेस में तेल के ताजिर[5] के निकल आता है
अब भी बग़दाद की गलियों में ख़लीफ़ा कोई

कोई इस ताजिरे-मासूम के हीले[6] देखो
साहिबे-खाना[7] बना जाता है कल का मेहमां
चाम के दाम चलाते हैं इजारे[8] उसके
नाम 'हारूँ' का हो, 'फ़ैसल' का हो ज़ेबे-उन्वां

अब बुख़ारा व समरक़ंद की राहों से कभी
बहरे-यल्ग़ार[9] न आएँगे हलाकू के मुग़ल[10]
आज की दुनिया है लारेंस[11] व गल्ब[12] की दुनिया
आज तस्ख़ीरे-मुमालिक[13] के हैं कुछ और उसूल

अबरू-ए-साम[14] का अदना-सा इशारा हो अगर
क़ौमें बिक जाती हैं और तख़्त उलट जाते हैं
अज़्मते[15]-देहली व एथेंस तो फ़साना हुई
हिन्द व यूनान इसी हातिम[16] का दिया खाते हैं

बसरा व मोसिल व बग़दाद हैं उसकी जागीर
रोम व मिस्र उसके हैं नजद उसका है शाम[17] उसका है
उसके सिक्के के तुफ़ैल एक जहाँ में आशोब[18]
आज बग़दाद का हारूँ[19] भी गुलाम उसका है

हर्फ़े-डालर की करामत है कुछ ऐसी बलवान
हर्फ़े-सिमसिम का फ़ुसूँ[20] गर्द हुआ जाता है
कच्चे धागे में बँधी आती हैं सरकारें सभी
तेल धरती की हर इक नस से ख़िंचा आता है

---

1. जादू, 2. रोज़ का दस्तूर, 3. कल्पना, 4. तेल, 5. व्यापारी, 6. बहाने, 7. घर का मालिक, 8. एकाधिकार ज़ोर, 9. हमले के समुद्र, 10. मुग़ल, 11. कर्नल लारेंस, 12. जॉर्डन का अंग्रेज सेनापति, 13. देशों पर कब्जा, 14. साम (अमेरिका) की भवें, 15. महानता, 16. मौज़ूदा दौर का दानी-हातिम लड़ाई, 17. सीरिया, 18. उथलपुथल, 19. ख़लीफ़ा हारून रशीद, 20. जादू

(4)

सेले-अनवारे-सहर[1] फैल चला हर जानिब
आख़िरे शब के धुंदलकों का फ़ुसूं भी टूटा
अब तो बेहतर है कि बस्ती की तरफ़ लौट चलूँ
आज ही रख़्ते-सफ़र बाँध के जाना जो हुआ

दिल के उलझे हुए अहवाल को सुलझा न सके
शह्रे-हारूं के ये पुरपेच मुसक्क़फ़[2] बाज़ार
मैं सराय से जो निकला तो फिरा सूक़ ब सूक़[3]
फिर भी छाया रहा जी पर वही बेनाम ग़ुबार

क़हवाख़ाने में जो पल भर के लिए जा बैठें
आ निकलता है इक आवारा गदाओं[4] का हुजूम
गूँज उठता है इक आवाज़ः 'ए शयअन लिल्लाह'[5]
घोल देता है जो हर जुर्अ[6]-क़हवा में ज़क्कूम[7]

शह्र व सेहरा में पले जाएगी कब तक यही भूक
आम कब होंगे अल्लादीन के जादू के चराग़
कोई शहज़ादा न लाएगा कोई रद्दे-तिलिस्म
कोई इन्सां को बताएगा कोई राहे-फ़राग़?[8]

अब बुख़ारा व समरक़ंद की राहों से नसीम[9]
लाया करती है दमे-सुबह बहारों के पयाम
और हर फूल से कह जाती है चुपके चुपके

---

1. सुबह के उजाले का दरिया, 2. छत वाले, 3. बाज़ार-दर-बाज़ार, 4. माँगने वाले, 5. कोई शै दो ख़ुदा के लिए, 6. प्याला, 7. थोहड़, 8. मुक्ति का मार्ग, 9. ठंडी-धीमी हवा

तुम भी चाहो तो बदल सकते हो गुलशन का निज़ाम

तुम को आदम के मुक़द्दर के जगाने के लिए
बाबुल व नेनवा के साहिर[1] न बुलाने होंगे
मिस्र व बग़दाद की बिगड़ी के बनाने के लिए
मिस्र व बग़दाद के जुम्हूर[2] जगाने होंगे

वर्ना कुछ सोच के भरता ही रहेगा आहें
शाही ड्योढ़ी पे सियःबख़्त[3] ग़ुलामे-ज़ंगी
और हर मोड़ पे आवाज़ः 'ए शयअनलिल्लाह'
हर मुसाफ़िर के तआक़ुब[4] में रहेगा यूँही

(1949)

1. जादूगर, 2. लोकतन्त्र, 3. अभागा, 4. पीछे

शंघाई

(ज़ैल[1] का नोट मई 1949 में नज़्म की पहली इशाअत के साथ छपा था)

शंघाई जो चीन का सबसे बड़ा तिजारती मर्कज़ और दुनिया की सब से बड़ी बन्दरगाह है, अपनी शबीना इश्रतगाहों[2] और क्लबों के लिए मशहूर है, लेकिन इन्हीं क्लबों के दरवाज़ों के आगे शंघाई के फुटपाथों पर हर साल औसतन तीस हज़ार इन्सान भूक और सर्दी से जान दे देते हैं। शंघाई में मज़दूरों को बारह से सोलह घंटे तक रोज़ाना काम करना पड़ता है, लेकिन उनकी बदहाली दुनिया भर में ज़र्बुल-मसल[3] है। मज़दूरों के हड़ताल करने और कराने की सज़ा उमूमन मौत है। शंघाई में क़दम-क़दम पर बदहैअत[4] माएँ, ज़र्द रू और नज़ार[5] बच्चों को गठरियों की सूरत में पीठ पर डाले अपने अस्तुख़्वानी[6] हाथ फैलाए सदा लगाती दिखाई देती हैं--बाबा, एक पैसा दे जाओ-माँ सदा लगाती है और पीठ पर जकड़ा हुआ बच्चा उसे दोहराता है। आगे चलिए तो हज़ारों लोग गर्दा-दर-गर्दा दीवारों के साथ दुबके अपने सर घुटनों में दिये पीली-पीली बेजान आँख निकाले ज़बाने-बेज़बानी से भीक माँग रहे होते हैं और मौहूम[7] उम्मीद में आसमान की तरफ़ नज़रें उठाये मौत का इन्तिज़ार करते रहते हैं।

इस शहर की बैनुलअक़्वामी[8] बस्ती में जो ग़ैर मुल्कियों का मर्कज़ था, एक ज़माने में एक बाग़ (बन्द गार्डन) के दरवाज़े पर ये बोर्ड आवेज़ां था :

Dogs and chinese not allowed

1. निम्न, 2. रातों में मौज-मस्ती की जगह, 3. कहावत, 4. कुरूप, 5. कमज़ोर, 6. हडीले, 7. भ्रममूलक, 8. अन्तरराष्ट्रीय

शाम के गहरे साये फिर पैग़ाम उदासी का ले आये
दर्द जो दिल में जाग उठे फिर दिल बहले किस के बहलाये
होटल की छत पर लेटा हूँ, जाने क्या क्या सोच रहा हूँ
करवट करवट बात वही है, नींद किसी पहलू भी न आये
देस पराया, दोस्त न बेली, हाले-ग़मे-दिल किससे कहूँ मैं
कौन समन्दर चीर के आये, मेरी लगी को आ के बुझाये

पायें बाग़ के गिरजा के घड़ियाल में ग्यारह बज चुके हैं
बाज़ारों का शोर व शग़ब[1] भी लम्हा बः लम्हा थमता जाए
दर्या की पहनाई[2] में इक स्टीमर की सीटी गूँजे
किस को ख़बर है किस मंज़िल को जाये है और किसको बुलाये
चाँद ने भी पूरब के झरोके में अपना मुख दिखलाया है
चाँद से बातें कौन करे जब दर्द ही दिल में उमड़ा आये

होटल अब सुनसान हुआ जाता है मुसाफ़िर सोने चले हैं
मुझ को मगर इस बिस्तर की एक एक शिकन डसने को आये
बैनुल-अक़्वामी[3] बस्ती में चहल पहल अब तक हो शायद
और कहीं इस दिल को भी अपने दर्द का दर्मां[4] मिल ही जाये
लड़के देख मिरे बिस्तर को ध्यान में रखना चौकस रहना
सैर का यह भी वक़्त है कोई, सोच के लड़का भी मुस्काये

शंघाई के पीले पीले सर बफ़लक ताजिर महलों से
बचता बचाता कहीं कहीं सागर की हवा का झोंका आये
बैनुल-अक़्वामी बस्ती की इश्रतगाहें जाग रही हैं
नग़्मे की इक मौज कभी थम जाये कभी तूफ़ां हो जाये
सिनेमाओं के दरवाज़ों से अफ़रंगी[5] जोड़े निकले हैं
हाथ कमर में, पलकें बोझिल, शानों[6] पर ज़ुल्फ़ें बिखराये

1. कोलाहल, 2. विस्तार, 3. अन्तरराष्ट्रीय, 4. उपचार, 5. फ़िरंगी, 6. कन्धों

एक का या बारह का अमल है
आज की पिक्चर लम्बी थी
आओ भी मादाम, आओ भी
ऐसे में घर क्या जाओगी
आधी रात तो बीत चुकी
मेडोना होटल में चलेंगे
रिक्शा और चीनी के बच्चे
रिक्शा ला!

आज बहुत पी ली है जानी
क़दम क़दम पर बहक रही हो
आओ और क़रीब आ जाओ
आधी रात तो बीत चुकी

टुक टुक देख रहा है कैसे
ओ चीनी ओ मरियल पिल्ले
रिक्शा ला!

रिक्शा वाला मरियल पिल्ला टुक टुक किस को देख रहा है
ताजिर को जो मेहमां बन कर आये और आक़ा बन जाये
रिक्शा क़ुली को याद हैं शायद अब तक वही पुरानी बातें
कैसे एक पच्छिम का ब्योपारी काँधे पर बक्स उठाये
चीन देस में आया था और मीठी बोली बोल रहा था
मीठी बोली जैसे कोई बात बात में शहद मिलाए
ए चीनी, ऐ भाई चीनी
ले चीनी अफ़्यून तो खा
तेरे विद्वानों के आगे दुनिया भर का सर नीचा
तेरे बिना सारी दुनिया में चौपट अँधियारा होता

हम तो निरे ब्योपारी ठहरे हम को किसी से क्या लेना
इक कोठी की जगह दिला दे ले चीनी अफ़्यून तो खा!

(2)

मेडोना होटल के अन्दर लोगों का मेला-सा लगा है
साग़र[1] खनकें, काग उड़े बोतल का और मस्ती छा जाये
बाल रूम के धुँधले धुँधले शीशों में से झाँक रहे हैं
सीना बः सीना, चेहरा बः चेहरा मटियाले मटियाले साये
एक मेज़ पर एक अलबेला यंकी बैठा डींगें मारे
एक तरफ़ इक बूढ़ा टॉमी बीते दिनों की बात सुनाये

इस बस्ती का बच्चा बच्चा हम लोगों को सज्दा करे था
इस बस्ती में हम लोगों ने लाखों क्या अरबों ही कमाये
बन्द गार्डन के दरवाज़े पर ये बोर्ड लगा रहता था
"कोई भी चीनी कोई भी कुत्ता बाग़ के अन्दर आने न पाये"
आज मगर स्कूलों के लड़के भी हमारे मुँह आते हैं
कोई मिरी सब दौलत ले ले! बीते दिनों को वापस लाये

मेडोना होटल के बाहर लोगों का मेला-सा लगा है
भिकमंगों के ग़ौल[2] खड़े हैं हाथों को कश्कोल[3] बनाये
एक तरफ़ पटरी के नीचे नंगी भूखी रोगी माएँ
ऊँघ रही हैं अन्धी बहरी दीवारों से टेक लगाये
सड़कों के एक एक मोड़ पर नन्हे बच्चे बूढ़े चीनी
चीख़ रहे हैं दाँत निकोसे "कोई सख़ी पैसा दे जाये"

1. शराब का प्याला, 2. झुण्ड, 3. भिक्षापात्र

मेडोना होटल के बाहर शंघाई के फ़ुटपाथों पर
आये बरस जाड़े के दिनों में पाला उतरे झक्कड़ आये
काल के मारे नंगे भूके तीस हज़ार इन्सां ऐसे हैं
मर जायें चुपके ही चुपके, भाग का लिखा कौन मिटाये
साहिब शोर मचा देते हैं, बू से नाक फटी जाती है
कौंसिल वाले चीख़ उठते हैं, इतनी लाशें कौन उठाये!

(3)

रात भी दिन भी शप शप शप शप पहिये चलें रोलर घूमें
शंघाई की फैक्टरियों की मशीनों को नींद न आये
छन छन छन छन सोने के सिक्के बैंक में जाकर गिरते जायें
मालिक की ठोड़ी पे हमेशा एक नयी तह चढ़ती जाये
चेहरे की रौनक बढ़ती जाये, रोज़ नयी तदबीरें सूझें
अब के बरस कुछ चाल चलें ऐसी कि मुनाफ़ा चोखा आये।

फ़ैक्टरियों में शप शप शप शप पहिये चलें रोलर घूमें
सोलह घंटे काम करे मज़दूर पलक झपका ना पाये
छन छन छन छन सोने के सिक्के बैंक के थैले भरते जायें
छः आने का पाने वाला बात करे और गोली खाये
कहीं कहीं पर दबी दबी फ़रियादों का इक मद्धम रेला
मशीनों के शोर से यकदम उभरे और बिफरता जाये।

एक आवाज़ :

ए साथी ये जालम ड्यूटी रोज करें पर चैन न पाएँ
किस से अपना हाल कहें हम किस को अपना दर्द सुनाएँ
ख़ून पसीने फरक न समझें भारी भरकम मिलें चलाएँ
फिर भी हमेशा दिल में ये दुविधा कल क्या पहनें, क्या क्या खाएँ
पेट पे पत्थर बाँध के सोएँ फुटपाथों पर उम्र बिताएँ

दूसरी आवाज़ :

एक हमीं पीड़ित नहीं साथी एक हमीं दुखियारे नहीं है
और बहुत साथी हैं हमारे हम इतने बेचारे नहीं हैं

हम धरती का पोटा चीरें कोला लोहा भर भर लाएँ
रिक्शा खींचें, रेशम कातें नहरें खोदें, महल बनाएँ
हम खेती को पानी देवें हम खेती से अन्न उपजाएँ

तीसरी आवाज़ :

हम खेती को पानी देवें हम खेती से अन्न उपजाएँ
फिर क्यों इतने संकट झेलें भूक से छुटकारा ना पाएँ
पूरब, पच्छिम, उत्तर, दक्खिन आगे पीछे दायें बायें
काल के राक्षस चारकूट में गिद्धों की सूरत मँडलाएँ

(4)

शंघाई के स्टेशन पर बन्दरगाह पर भीड़ लगी है
देखें कब स्टीमर छूटे कब दक्खन को गाड़ी जाये
सड़कें वही हैं और सड़कों के मोड़ वही पर रफ़्ता-रफ़्ता
इक शंघाई दम तोड़े और इक शंघाई उभरा आये
एक एक इन्सान के दिल में आग की लपटें जाग रही हैं
इन लाटों को कौन दबाये, इस जवाला को कौन बुझाये।

ये रेला तो रुक न सकेगा, ये मौजें तो थम न सकेंगी
यंसी का तूफ़ान-ख़रोशां[1] बढ़ता आये चढ़ता आये
नौबत बाजे, क़िरना[2] फूकें माओ के दहक़ान[3] गोरिल्ले
इन की लगन को कौन ख़रीदे इन की क़ीमत कौन चुकाये
मैदां इनके पाँव की मिट्टी, जंगल इनको घास के तिनके
दरिया नाले हुक्म के बन्दे, परबत इन को सीस नवाये

शंघाई में, कलकत्ते में लोगों को पैग़ाम सुना दो
भूक से नंग फ़ुटपाथों पर अब से कोई मरने ना पाये
सायगोन में, कोलम्बो में, सब के दिल में जोत जगा दो
रोने के दिन बीत चले अब कोई न दुखिया नीर बहाये
रात जहाँ बलवान हो अब तक, आशाओं के दीप जला दो
उजले दिनों की धुँदली रेखा अँधियारों में डूब न जाये।

(1949)

1. शोर मचाता तूफ़ान, 2. सींग, 3. किसान

मुज़ाफ़ात[1]

झुटपुट वक़्त है बहता हुआ दरिया ठहरा
सुब्ह से शाम हुई दिल न हमारा ठहरा

(1)

उन से वा'दा है कि इक नज़्मे-हसीं लिखूँगा
अपनी महबूबा बेनाम की ज़ुल्फ़ों से तवील
अपने मजबूर इरादों से ज़्यादा बेबाक
अपनी ख़ाकिस्तरे-अफ़्सुर्दा[2] के शोलों की दलील
जैसे बरसात की रातों में लपकता कौंदा
चीर देता है घटाटोप स्याही की फ़सील
आज इस नज़्म की तक्मील[3] का सौदा ले कर
फिर मुज़ाफ़ात के खेतों में निकल आया हूँ
रेल के पुल की सलाख़ों का सहारा लेकर
सोचता हूँ कि सरे-राह यहीं दम ले लूँ
दूर वो धुन्द का बादल है, कि गाड़ी का धुआँ
और वो नज़्म जो लिखनी है, मगर क्या लिखूँ?

अपने यारों से जुदा हो के ये आलम है कि आज
दिल नहीं क़हत[4] का उजड़ा हुआ वीराना है
अब हैं बेमेहरी-ए-जानां ही की बातें बाक़ी
अब फ़क़त बरहमी[5]-ए-ज़ुल्फ़ का अफ़साना है
और न शंघाई पे यल्ग़ारे-हरीफ़ाना[1] है

1. आसपास का क्षेत्र, 2. भस्म-उदास, 3. पूर्णता, 4. अकाल, 5. बिखरी

अब ने बगदाद को उस रात की याद आती है
इक शंघाई दम तोड़े और इक शंघाई उभरे
हमने जब वादी-ए-ग़ुर्बत[2] में क़दम रखा था
दूर तक यादे-वतन आयी थी समझाने को
फूल दामन से लिपटते थे ता'तुर[3] बकिनार
ख़ार[4] बेताब थे हर राह में बिछ जाने को
और इक दोस्त सरे-तंज़ पुकार उठा था
"कोई पत्थर से न मारे मिरे दीवाने को"

और मैं एक से इक राह में उफ़्तां[5] ख़ेज़ां[6]
कितने इम्सार[7] व विलायात[8] से होता होता
कितने हमरंगे-ज़मीं दानों से बचता बचता
लुक्कए-अब्रे-गुरेजां[9] सरे-दश्त व सेहरा
शहरे-ख़ूबां के झरोकों का तसव्वुर बाँधे
एक दिन ऐसी ही इक शाम यहाँ आ निकला

(2)

कितना ख़ुश था कि अब उस शहर को छोड़ आया हूँ
जिस में आज़ादा रवी जुर्म गिनी जाती है
सुब्हे-ताज़ा को है अफ़्सुर्दा शुआओं[10] पे ग़ुरूर
रात बे नूर सितारों की क़सम खाती है
इश्क़े-सादा को जहाँ रिश्ता बपा रखते हैं
अक़्ले-गुस्ताख़ कहीं राह नहीं पाती है

अब यहाँ बैठ के लिखेंगे मुहब्बत भरे गीत
मेरे शाइर ने कि दिल में था मुक़य्यद[11] बैठा
फिर उसी गमज़ः ए मानूस[12] से अँगड़ाई ली
फिर इन्हीं मलगिज़े औराक़[13] का दफ़्तर खोला
और फिर किल्क गुहर बार[14] के ऊपर झुक कर

1. प्रतिद्वन्द्वी का आक्रमण, 2. परदेश की वादी, 3. सुगन्ध, 4. काँटे, 5. गिरता-पड़ता, 6. उठता, 7. मिस्रों, 8. विलायतों, 9. भागते बादलों के टुकड़े, 10. किरणों, 11. क़ैद, 12. परिचित इशारा (भंगिमा), 13. मैले पन्ने, 14. मोती बरसाने वाला क़लम

एक मस्जूदे- ख़याली[1] से यही अर्ज़ किया :
मैं तिरे मिस्र में बिक जाऊं सरे - राहगुज़र
मैं तिरे मिस्र के बाज़ारों में रुस्वा हो जाऊँ
तेरे अशराफ़[2] मुझे तोशः ए अर्ज़ां[3] समझें
मैं तिरे शहर में नज़्रे-ग़मे-दुनिया हो जाऊँ
मुझ को नाकर्दा[4] गुनाही की सज़ा भी मंज़ूर
क्या है इक बार जो मा'तूबे-ज़ुलेख़ा[5] हो जाऊँ।

अब मगर जानिबे-किन्आं[6] न क़दम उठेंगे
मुझ को मालूम है मा'मूरः[7] ए-किन्आं क्या है?
मुझ से पोशीदा नहीं ख़ाके-वतन की क़ीमत
मा' नी-ए-ख़ार व ख़स व सुंबल व रेहां[8] क्या है
कितनी बेमहर हुआ करती हैं घर की यादें
ज़ीस्त[9] में मर्हलः ए-शामे-ग़रीबां क्या है

मैं ग़मे-शामे-ग़रीबां का गिलामंद[10] नहीं
ज़हर लगते हैं वतन के दरो-दीवार मुझे
जाने क्या सोच के जन्नत से निकल आया हूँ
तुहमते-गंदुम[11] व हव्वा से है इन्कार मुझे
मेरी सरगुश्तगी[12]-ए-इश्क़ पे जाये न कोई
रसन व दार[13] का समझे न सज़ावार मुझे

(3)

लेकिन इस शहर के कूचे भी वही कूचे हैं
यह नया शहर ख़यालों का नया शहर कहाँ
एक काँटा है कि सीने में खटकता है हनोज़[14]
इक छलावा है कहीं ज़ेहन की क़ब्रों में निहां[15]
फिर कोई मंज़िलें-दुश्वार बुलाती है मुझे

1. काल्पनिक सज्दे में गिरा हुआ, 2.कुलीन जन, 3. सस्ती यात्रा सामग्री, 4. अनकिया, 5. मिस्र-नरेश की पत्नी का कोप भाजन, 6. पैग़म्बर युसूफ़ की जन्म स्थली, 7. आबाद, 8. खुशबूदार घास का अर्थ, 9. जीवन, 10. शिकायत करने वाला, 11. गेहूँ खाने का आरोप, 12. वर्त्तांत, 13. फाँसी का फंदा, 14. अभी तक, 15. छुपा हुआ

दिल की वहशत का ठिकाना तो यहाँ है न वहाँ
उन से वा'दा है कि इक नज़्मे-हसीं लिखूँगा
लेकिन अफ़्कारे-हसीं[1] ज़ेहन में आते ही नहीं
ता क़लम आ के फिसल जाता है क्या क्या मिस्रा'
संगलाख़[2] इतनी भी होती नहीं शे'रों की ज़मीं
शौक़ कहता है कोई दम तो उठा लो यह हिसार[3]
अक़्ल कहती है वही दश्त न क़िस्मत हो कहीं

और इधर कूचा व बाज़ार की पहनाई में
जाने क्या शोर है—ये शोरे-क़यामत ही न हो
अक़्ल कहती है दरीचों[4] के गिरा दो पर्दे
शौक़ कहता है—"नहीं दिल को टटोलो, उठो"
मैं इसी बुर्ज में रहता हूँ मिरा नाम ये है
दोस्तो, किस को बुलाते हो, कहो कुछ तो कहो

'वारसा' है कि सँभलने भी नहीं पाया है
ख़ून अब तक है 'बुदापेस्ट' से सीने के रवां
अब भी दिलगीर है 'देरोज़' की यादों से प्राग
और मग़रिब[5] की तरफ़ तकता है हैरां हैरां
फ़ाख़्ता लाएगी पैग़ामे-क्रिस्मस कि उक़ाब[6]
कौन-सी शै है सिरा पर्दे ए मग़रिब में निहां

कुश्ते-दहक़ान[7] को रौंदेंगे 'दबाबे' आ कर
गोलियाँ ढलती हैं गुमनाम सिपाही के लिए
सर पे तय्यारों[8] की घुमकार सुनाई देगी
दश्त व कुहसार[9] पे छा जाएँगे फ़ौजों के परें
जैसे महबस[10] से निकल आयें सुलेमान[11] के जिन्न
जैसे पिंडोरा के सन्दूक़ का खटका खुल जाये

1. सुन्दर विचार, 2. पत्थर की तरह कठोर, 3. घेरा, 4. खिड़कियाँ, 5. पश्चिम, 6. गुरूड़, 7. किसानों के साथ मारधाड़, 8. जहाज़, 9. पहाड़ी सिलसिला, 10. क़ैदखाना, 11. पैगम्बर हज़रत सुलेमान

(4)

उन से वा'दा है कि इक नज़्मे-हसीं लिखूँगा
पर यह किस सम्त[1] से आने लगी बारूद की बू
'कोरिया' दूर है, इतना भी मगर दूर नहीं
खेत उजड़ते हैं, ज़मीं भुनती है, बहता है लहू
जिस्मे-नाज़ुक से गुज़र जाता है जलता सीसा
टूट जाता है बयक ज़र्ब जवानी का सुबू[2]

काँटा चुभता है तो रग रग की ख़बर लाता है
एक की मर्ग[3] से होता है ज़माना ग़मगीं
जंग होती है तो संगीनें भी चुभती हैं ज़रूर
मरने वालों का शुमार एक नहीं सौ भी नहीं
कोई बेटा है कि प्यारा है कि भाई है कि बाप
"कुछ तो है जिससे हुआ जाता है मैदां रंगीं"

और मैं सोचता हूँ, अम्न के होने तक हैं
ज़िन्दगी के सभी सामां, ग़मे-जानां के समेत

1. दिशा, 2. घड़ा, 3. मौत

अम्न का आख़िरी दिन

आज क्यों शाम के अख़बार की हर सुर्ख़ी में
एक इक लफ़्ज़ बुने जाता है उलझे हुए जाल
वस्वसे[1] उमड़े चले आते हैं बादल बादल
कुलबुलाते हैं पड़े ज़ेहन के गोशों[2] में ख़याल
अब तो हर सतर से आने लगी बारूद की बू
अब तो हर सफ़्हे से बे खटके गुज़रना है मुहाल[3]

बहरे-शबख़ून[4] बढ़े आते हैं यादों के हुजूम
देखें क्या हाल बने सुब्ह के होते होते
इतनी सोचें हैं कि पहले कभी सोची ही न थीं
इतने चेहरे हैं कि पहले कभी देखे ही न थे
अब तो काबूस[5] की सूरत हैं रग व पे पे मुहीत[6]
शाम तक वो सभी नक़्श थे धुँधले धुँधले

'अलिफ़'[7] आँधी है कि मग़रिब से उठा चाहती है
अलिफ़ उम्मीद चराग़े-तहे-दामां है अभी
अलिफ़ एटम है बागोश हज़ारां आशोब
अलिफ़ आदम कि बःगम चाकगिरेबां है अभी
अलिफ़ इक अम्न कि जां दी थी तो पाया था उसे
अलिफ़ इक अश्क कि मिज़गां[8] पे फ़रोज़ां[9] है अभी
'बे' वो बन्दूक कि इक रोज़ कहीं सर होगी
'बे' वो बमबारों का झुरमुट है कि बढ़ता आये

1. भ्रम विचार, 2. कोने, 3. कठिन, 4. छापामारी की तरह, 5. भय का भयानक रोग, 6. आच्छादित, 7. पहला वर्णाक्षर-'अ' 8. पलकें, 9. रौशन

कभी दहक़ां के घरौंदे पे तो ख़िरमन पे कभी
बेअमां बर्क़[1] का कौंदा ही पड़ा लहराये
क़र्ये कर्ये[2] से लपकती हुई लाटे उठें
बस्ती बस्ती को शरारों[3] से झुलसता जाये।

मेरा कॉलेज, मिरी सैरें, मिरे शाइर, मिरे गीत
मेरे गुंचे, मिरी बेलें, मिरे ख़िरमन[4], मिरे खेत
मेरे चेहरे, मिरे सीने, मिरी रातें, मिरे चाँद
मेरी वादी मिरे दरिया मिरे साहिल मिरी रेत

फिर तो जयकारों के टकराव से दहलेगी ज़मीं
पीस डालेंगे नयी पौद को टैंकों के ख़रास[5]
यादगारों में बनाएँगे मिनारे कभी गेट
आप वो लोग नज़र आएँगे फिर दूर न पास
एक इक घर में जो सैलाबे—बला उमड़ेगा
उस को रोकेंगे न इन्आम न तमग़े न क्रॉस

मैं तो चीनी हूँ न यंकी हूँ न काला हूँ न लाल
बस यूँ ही सैर को खेतों में निकल आया हूँ
अम्न इक हर्फ़े—सियासत है कि कुछ और भी है
यह समझ में कहीं आ जाये तो आगे भी चलूँ
दूर वो गैस का बादल है कि तोपों का धुआँ
और वो नज़्म जो लिखनी है—मगर क्या लिखूँ?

(1951)

इस घटाटोप अँधेरे से बचाएगा कोई?
गुल हुई जाती हैं इस बुर्ज की सारी शम्एं
क्या हुए महफ़िले-इन्साफ़ व दियानत[6] के मुग़ां[7]
आज हम दिल की हिकायत जो कहें किस से कहें
"अब यह सोचा है कि पत्थर के सनम पूजेंगे
ताकि घबराएँ तो टकरा भी सकें, मर भी सकें"
'मालरो' मोतमदे-हलकः-ए-दिगाल[8] है आज

1. बिजली, 2. गाँव-गाँव, 3. चिंगारियाँ, 4. घोंसला, 5. कोल्हू, 6. ईमानदारी, 7. अग्नि पूजक, 8. दगाल के विश्वसनीय

'सार्त्र' का महे-नख़्शब[1] है सरे-शाम गुरूब[2]
आज 'लेहमेन' का तकिया है मिज़ाजे-योरव
और 'आडॅन' को फ़क़ते-रूहे-मसीही महबूब
'इशरवुड' आज ऋषि योग के साधन सीखे
कल का ना ख़ूब 'स्पेंडर' की नज़र में हुआ ख़ूब

(4)

वक़्त के साथ मुफ़ादात[3] बदल जाते हैं
वर्ना अब भी वही तक़दीरे-जहाँ है कि जो थी
आज फिर जंग के बादल हैं फ़ज़ाओं पे मुहील[4]
दिल पे कल्चर के सिपाही की सिनां[5] है कि जो थी
फ़ाशियत[6] ताज़ा अज़ाइम[7] को लिए उठी है
अम्न व इन्साफ़ की आवाज़ कहाँ है कि जो थी

'मेड्रिड अब भी हमः वक़्त[8] लहू रोता है
वादियां 'बार्सिलोना' की हैं ज़िन्दां[9] अब तक
जिनमें सोते हैं ब्रिगेड के जांबाज़ अपने
क़ुर्तबा[10] के वो नावाहात[11] हैं वीरां अब तक
उनकी क़ब्रों पे सलीबें न कोई लोहे–मज़ार[12]
ये मुसाफ़िर है रक़ीबे–सरो-सामां अब तक

सेहर टूटा नहीं 'बाबुल' के ख़ुदावंदों का
कितने फ़िरऔन ख़िरामां हैं सरे-साहिले-नील
कितने रोमां हैं शहन्शाही-ए-नीरो में नज़ार[13]
'पम्पाई' हैं बहीमाना[14] तमाशों के क़तील
जिसके घाव की ये समन्दर हुए सुर्ख़
अब भी यूनान के सीने में तराज़ू है वो कील

'पे' हैं पेंशन कि सिपाही को शुजाअत[15] के एवज़
एक पहलू में ठुमकती-सी बेसाखी दी जाये
पे वो पलटन है कि उड़ कर सरे-मैदां पहुँची

1. तुर्की के नगर का चाँद, 2. अस्त, 3. हित, 4. आच्छादित, 5. बरछी की नोक, 6. फ़ाशिज्म, 7. संकल्प, 8. हर वक़्त, 9. क़ैदखाना, 10. स्पेन का शहर, 11. क्षेत्र, 12. क़ब्र की तख़्ती 13. अशक्त, 14. क्रूर, 15. वीरता

पे वो प्यारे हैं कि मैदां से न वापस आये
'ते' वो तमग़ा है कि बरसों की रियाज़त[1] से मिले
और किसी लाश की छाती पे चमकता रह जाये

'टे' किसी बाग़े-जवानी की लचकती टहनी
बम के उड़ते हुए टुकड़ों से है पारा पारा
बूढ़े माँ बाप की बरसों की दुआओं का समर[2]
'से' किसी अजनबी मैदान में दम तोड़ गया
लौटते क़दमों से गूंजेगी न घर की दहलीज़
''आपका लख़्ते-जिगर मुल्क पे क़ुर्बान हुआ''

'जीम' वो जंग का बाज़ार है जिस में जा कर
इतनी सदियों में भी इन्सान की क़ीमत न बढ़ी
'चे' वो चाँदी है वो चाँदी के चमकते सिक्के
जिन से दुनिया की हर इक चीज़ ख़रीदी न गयी
फिर भी हर बीस बरस बाद वही सौदे हैं
वही ताजिर हैं वही जिन्स है क़ीमत भी वही

'हे' हिकायत है कि होंठों पे अधूरी रह जाये
है वो हस्रत है कि सीने को बना ले मदफ़न[3]
'ख़े' ख़यालात का रेला है कि यक्सर[4] रुक जाये
दब के रह जाये जो ख़ंदक़ के ख़लाओं में बदन
टैंक कर देंगे हर इक ढेर को आ कर हमवार
बेनिशां क़ब्रों पे उग आएँगे दो साल में बन

'दाल' है दर्द से लबरेज़ दिलों की धरती
'डाल' है डोलता सीना कभी ढलका आँसू
'ज़ाल' है ज़िक्र किसी दोस्त का वो ज़िक्रे-जमील
हाय किन रफ़्ता बहारों के गुलों की ख़ुशबू
आज लाशों के ता' फ़्फ़ुन[5] में दबी जाती है
सर्द संगीनों के ज़ख़्मों से उबलता है लहू
'रे' वही रेल की सीटी वही रा'ना[1] चेहरा

1. श्रम, 2. फल, 3. दफ़न होने का स्थान, 4. अकस्मात्, 5. दुर्गन्ध

रे वही रात वही उसके भयानक सपने
चौंक कर कौन ये बिस्तर से यकायक उठा
"मेरे बच्चे को ख़ुदावंद सलामत रखे"
एक तारा कहीं टूटा था कहीं डूब गया
डाकिया आएगा दो रोज़ में इक तार लिए

'ज़े' है वो ज़हर कि फिर रूह में घुल जाएगा
ज़े है वो ज़ख़्म कि लाता है ख़बर दिल तक की
अब भी बस्ती में बड़े पीर का मेला होगा
लहलहाते हुए खेतों में बहार आएगी
पर न इन राहों से लौटेगा बंसी वाला
अब चरागाह में गूंजेंगी न तानें उसकी

'सीन' सेहरा किसी दूल्हा का किसी सेज के फूल
सीन जलता हुआ सीसा किसी संगीन की धार
सीन साहिर हैं सियासत के कि घर में बैठे
अपने ज़ानू पे लिए सुब्ह के सारे अख़बार
सोचा करते हैं न पढ़ते हुए ताज़ा ख़बरें
रूई के भाव में होता है चढ़ाव कि उतार

अपने इस शहर से हैं दूर वो मैदां जिन में
'शीन' शोला है कि बारूद का सीना चाटे
किसी मस्जिद का मिनारा, किसी स्कूल की छत
इक धमाके में सुलगता हुआ मलबा बन जाये
कोई खेती कोई कारख़ाना कोई पुल कोई रेल
एक दुनिया है कि बरसों में बनाए न बने

'स्वाद' वो सुब्ह कि हर ज़ेहन की पहनाई में
'ला के बो देती है नादीदः[2] सलीबों की क़तार
'ज़्वाद' ख़बरों के ज़मीमों[3] का वो उगला हुआ ज़हर
जिससे कुछ और ही बढ़ जाता है वहशत का फ़िशार[4]
नाचने लगते हैं बेताबी से फ़ेहरिस्तों के नाम

1. सुन्दर, 2. अदृश्य, 3. परिशिष्ट, 4. निचुड़न,

आँखें बन जाती हैं रोके हुए अश्कों के मज़ार

'तोय तव्क़्क़' का सेहरा है जहाँ से अब भी
अपने गुमगश्ता[1] अज़ीज़ों[2] की सदा आती है
इस जगह फ़त्ह की ख़बरें हैं न जलसे न जुलूस
एक सर सर हैं कि आती है गुज़र जाती है
उस्तख़ुवानों[3] से भला किस को मुहब्बत होगी
यहाँ कोई दोस्त न हमदम न मुलाक़ाती है।

'ज़ोय' ज़ुल्मात[4] का दर्या है कि तूफ़ान बदोश[5]
आस की नन्ही सी कश्ती को डुबाने आये
और जब ज़ुल्म की मीआद के दिन और बढें
'ऐन' वो इश्रते-फ़र्दा[6] है कि अन्क़ा[7] हो जाये
'ग़ेन' वो ग़म है कि जानां से न दौरां से है ख़ास
दिल मगर उसकी कसक से न सँभलने पाये

'फ़े है वो फ़त्ह कि कुछ ले तो गयी दे न सकी
फ़े है फ़र्दा कि छलावे का छलावा ही रहा
क़ाफ़ क़र्या है कि इतना भी न वीरां था कभी
अब न चूल्हों से धुआँ उठता है नीला नीला
और न वो खेत न वो फ़स्लें न वो रखवाले
एक इक गाँव के चौपाल में उल्लू बोला

'काफ़' नैनों के कमल काफ़ किताबी चेहरे
काफ़ काकुल[8] है कि ख़ुशबू में बसी रहती थी
और जब दूर के देसों के सिपाही आये
काफ़ कर्गस[9] ने खुले खेत ये बाज़ी जीती

कोरिया कितने ख़राबों का पता देता है
यह जगह शहर थी यह गाँव था यह बस्ती थी

गाफ़ गाती हुई गोली है कि गन से निकले
किस गुमनाम सिपाही का निशाना बाँधे

1. खोए हुए, 2. प्रिय-रिश्ते, 3. हडीले, 4. अन्धकार, 5. कन्धे पर, 6. आने वाले कल का वैभव, 7. दुर्लभ पक्षी, 8. बालों की लट, 9. गिद्ध

एक सायः किसी खाई में तड़पता रह जाये
अपनी बरसों की तमन्नाओं को सीन में लिए
गाफ़ गबरू है कि बाईस बहारों में पले
लाम लाशा है कि दो रोज़ के अन्दर सड़ जाये

'मीम' महबूब का आग़ोश भी है मौत भी है
एक ही वक़्त में मुमकिन नहीं दोनों से निभाव
'नून' नदी का मधुर नग़्मा भी नेपाम भी है
अब इसे दोस्त बनाओ कि उसे दोस्त बनाओ
ज़ीस्त और मौत में मुश्किल नहीं जानिबदारी
सीधी बातों को दलीलों के लबादे न पहनाओ

'वाव' वक़्त के हाथों से है निकला जाता
वाहमे देते हैं आकर दरे-दिल पर दस्तक
फ़ाख़्ता कितनी भी तय्यार व सुबुक[1] सैर सही
सैकड़ों कोस हैं बमबार की रफ़्तार तलक
अम्न के गीत की लय तेज़ करो तेज़ करो
साहिले-दूर से आने लगी तोपों की धमक

'हे' वो हीरो हैं कि फिर निकले हैं छबीले बन कर
बस्ती बस्ती को हिरोशिमा बनाने के लिए
'ये' वो यादें हैं कि धुँधलाएँ न मिटने पायें
और हम जंग की दहलीज़ पे फिर आ निकले
ये वो यूसुफ़ कि ख़ुदा को भी न सौंपे जायें
फिर उन्हीं अजनबी मैदानों का रस्ता लेंगे

आस्मां तीरः व तारीक[2] है, तारे मग़्मूम[3]
चाँद बादल से निकलते हुए घबराता है
शम्ए-उम्मीद की लौ काँप रही है कब से
दिल धुआँधार घटाओं में दबा जाता है
लो किसी दूर के गिरजा में वो घड़ियाल बजा
काफ़िला सुबह का आता है—कहाँ आता है?

(1951)

1. हल्की उड़ने वाली, 2. अन्धकारपूर्ण, 3. ग़मगीन
* अलिफ़ से ये तक उर्दू के वर्णाक्षर हैं।

उफ़्ताद[1]

"कौन सितारे छू सकता है राह में साँस उखड़ जाती है"
—अख़्तरुल ईमान

(1)

निगाहों की दूरी की दुश्वार मंज़िल में तुम आज से दूरतर हो गये हो
शबे-हिज्र की अवल्लीं[2] मंज़िलों से गुरेज़ां मिसाले—सहर हो गये हो
तुम्हे ज़ीस्त[3] के मोड़ पर आ के मिलने के वा' दे की मीआद तो आ चुकी है
मगर अब तो कुछ पाँव थक से चले दूर की बाट है शाम धुँधला चुकी है
वो उत्तर के मुल्कों से कूँजें रुपहली मुसल्सल मुसल्सल चली आ रही हैं
वो पच्छिम से उमड़े अँधेरे की परछाइयाँ सुरमई पँख फैला रही हैं
वो पूरब में मिमयाती भेड़ों के गल्ले के बाड़े के पहलू में दहका अलाव
मगर काले कोसों की दुश्वार मंज़िल कहे जा रही है, अभी लौट जाओ

सुबुक[4] चाँद ने सुरमई शाम की भारी चिलमन को सरका के चेहरा दिखाया
उदासी के गिर्दाब[5] के दायरे और गहरे हुए जाने क्या याद आया
फ़ज़ाओं में कुछ जानी पहचानी शक्लें हयूलों[6] की सूरत कहीं तैर आयीं
किसी ने सरे-सुब्ह ड्योढ़ी पे आ कर गयी शब की नाशाद[7] ख़बरें सुनायीं
बायीं चाके-दामां भी किन्आं के यूसुफ़ सनद बेगुनाही की क्या क्या न लाये
मगर क़िल-ए-मिस्र के ऊँचे बुर्जों को ज़िन्हार ज़िन्हार[8] झुकना न आये
यह हाली के बैलों की जोड़ी के घुँघरू झनाझन झनाझन बजे जा रहे हैं
कि यादों की वीरान राहों से फिर दोस्तों के वही क़ाफ़िले आ रहे हैं

शबे—माह में घूमते घामते शे'र सुनते सुनाते सहर करने वाले
वो सरमस्त व आवारा अहबाब अपने वो सपनों के लोभी उमंगों के पाले

1. आफ़त, 2. प्रथमतः, 3. बचने वाला, 3. ज़िन्दगी, 4. हल्का, 5. भँवर, 6. आकृतियाँ, 7. अप्रसन्न, 8. कदापि

किसी साहिले-बहरे-ज़ख़्ख़ार[1] की सीपियाँ चुनते चुनते कहाँ खो गये हैं
कि उनकी जबीनों[2] के रौशन चराग़ों की यादों के शो'ले भी मद्धम हुए हैं
अरे ऊँचे ऊँचे हरीमों[3] के ऊपर से पर्वाज़ करते परिंदों की डारो
सुनो तो सही कोई दम को हमें साथ ले जाओ उन दोस्तों में उतारो
मगर गाँव के झोंपड़ों का धुआँ जिस में रंगे-शफ़क़[4] थोड़ा सँवला रहा है
निगाहों की दूरी के पर्दे की मानिन्द दीवारे-मुहकम[5] बना जा रहा है।

(2)

मिरे दिल के रौशन झरोके से झाँका है फिर एक मासूम व शादाब चेहरा
तसव्वुर मुझे महजूर[6] जल्वों का ख़ामोश पैग़ाम देता रहेगा
उसे अपनी वहशत की उफ़्ताद[7] समझें कि पिंदार[8]—मजबूर की बेनियाज़ी[9]
बहुत दिन बिसाते-जहाँ पर रहे पर ये नरदीं[10] न छुईं ये खेली न बाज़ी
रफ़ीक़ों[11] ने अपने मसाफ़े[12]—जहाँ में विलायात जीती हैं मैदान मारे
मगर हम उन से बिछुड़ के लड़ाई के पहले ही मैदां में अपने से हारे
कोई आशना आशना सी ख़लिश फिर भी मजबूर करती है बोलो न बोलो
कहीं से बू-ए-दोस्त आने लगी है ज़रा मन की ड्योढ़ी की कुंडी तो खोलो

बहुत रोज़ की बात है सर्द रातों में अँधेरा चराग़ों के सायों में लेटे
किताबों के क़िस्सों के जिन्नों से दुनिया ज़माने के अस्रार[13] पूछे थे हमने
सुना था हमारी ही रह तक रही हैं निच्छत्तर की परियाँ सरापे सँवारे
मगर कोई अपने बुलाए न बोला बहुत नाम ले ले के हम तो पुकारे
किसी ख़िज़्रे-फ़र्ख़न्दा[14] सूरत ने हम को न जंबील[15] बख़्शी न जादू सिखाया
हमें तो ज़माने के कोहे-निदा[16] से यही एक पैग़ाम सुनने में आया
"न सीने से आहों के बादल उठाओ, न आँखों से अश्कों के ख़ोशे[17] उगाओ
जो मेहनत करो उसकी उजरत भी माँगो जो खेती को जोता है रोटी भी खाओ"

मगर आने वाले ज़माने के 'मर्लिन'[18] जो आये तो बा सद[19] करामात आये
पुराने सहीफ़ों[20] के अहकामे-अशरा[21] को मन्सूख़ करके नये हुक्म लाये
किताबों के पेचीदा लफ़्ज़ों का जादू भी धरती के बेटों के सर चढ़ के बोला
नये हादियों[22] ने नये मेम्बरों से नये आदमी पर नया भेद खोला
सरे-ताक़ चर्ख़ चहारम के ऊपर, दबीरे-अज़ल[23] के नविश्ते[24] धरे हैं

---

1. अथाह समुद्र के तट 2. मस्तक 3. प्रसाद, 4. क्षितिज की लालिमा, 5. मज़बूत, 6. वियोगी, 7.आपत्ति, 8. अभिमान, 9. निःस्पृह, 10. चौसर की गोट, 11. साथियों, 12. युद्ध, 13. भेद, 14. शुभ अदृश्य, 15. पिटारा, 16. आवाज़, 17. गुच्छा, 18. किंग आर्थर के दरबार का जादूगर, 19. सैंकड़ों, 20. धर्मग्रन्थ 21. दस सूक्तियाँ, 22. हिदायत देने वाले, 23. अनादि-लेखक, 24. लेख-पत्र

कि जिन में बशर के मुक़द्दर के ऐ'राब[1] व औक़ाफ़[2] तक मुर्तसम[3] हो चुके हैं
जो छोटा है तहक़ीक़[4] छोटा रहेगा बड़े ही के मक़्सूम[5] में है बड़ाई
यह कावा[6] है बाग़ी 'अबूज़र' फ़सादी यह 'मुज़दक' है काफ़िर ये 'लेनिन' क़साई'

(3)

उजाले के मुन्नाद[7] सूरज की रफ़्तार तारों से या कहकशां[8] से छुपी है
तो फिर आज की शाम क्यों आने वाले सवेरे के वादों को भूली हुई है
उजाले अँधेरे के तन्नाज़[9] तागे तिलिस्मात क्या क्या बुने जा रहे हैं
नये बंदीख़ानों की बाड़ों के काँटों में वहशी ख़यालों को उलझा रहे हैं
यूँ ही शब के पहले पहर के मुसाफ़िर बहर गाम ताज़ा ग़ज़ल गाने वाले!
सलासिल[10] के लोहे के संगीं सलाबत[11] को शबिस्तां[12] पे पिघलाने वाले!
ज़माने ने गेली ग़ुलामों से अब तक हज़ारों बरस फ़ासिला तय किया है
हर इक गाम पर ये मुसाफ़िर ने देखा कोई बेस्टल[13] राह रोके खड़ा है

ज़मीं ज़ादगां पर ज़मीं ज़ादगां ने कभी तीर छोड़ा कभी दाम[14] फेंका
कभी शहर व क़र्या को मलबन[15] बनाया कभी किश्त[16] व गुलशन
पे नेपाम फेंका
कभी अपने तर्रार बमबार भेजे, कभी जर्रार[17] फ़ौजें बढ़ायीं
कभी टैंक दर टैंक चढ़ आये ज़ालिम मगर ऐसे हक़ बात रुकती है साईं?
किसी ने कहा अब उड़न छतरियों से क़लम के जियाले सिपाही उतारो
चलो चल के मतलब के मैदान देखो, चलो कच्चे ज़ेहनों पे शबख़ून[18] मारो
फ़साने बनो यह नया आदमी ग़ासिबों[19] के है खुल खेलने का बहाना
किसी ने बहायम[20] के बाड़े[21] का बासी किसी ने ख़ुदावंदे-नाकाम जाना

नया आदमी बूढ़े आदम का बेटा कहाँ तक भला ख़ुद को हैरान करता
सरे-बामे-चर्ख़े-चहारम भी पहुँचा सरे-बाले-जिब्रील[22] तैरान[23] करता
असीरे-अज़ल[24] ने दबीरे-अज़ल के नविश्तों की महफ़ूज़ तहरीर बदली
यह बेबाक व गुस्ताख़ व काफ़िर तो ठहरा मगर अर्ज़े-अस्फ़ल[25] की
तक़दीर बदली

---

1. मात्राएँ, 2. अन्तराल, 3. अंकित, 4. शोध, 5. हिस्से में, 6. ईरान का एक लोहार, 7. मुनादी करने वाला, 8. आकाश गंगा, 9. तन्ज़ करने वाले, 10. बेड़ियाँ, 11. कठोरता, 12. शयनकक्ष, 13. फ्रांस का बदनाम कैम्प, 14. जाल, 15. नाज़ियों का बन्दी कैम्प, 16. खेती, 17. बड़ी तादाद में, 18. रात का छापा, 19. क़ब्ज़ा करने वाले, 20. मवेशी, 21. जॉर्ज ऑर्वेल का 'एनिमल फ़ार्म', 22. ईश्वर-दूत के पंख, 23. उड्डयन, 24. हमेशा का क़ैदी, 25. बीच की ज़मीन

कभी 'हुआंग हो' के ख़रोशां बहाव के तसख़ीर करने को पुश्ते बनाए
कभी 'आमो' दर्या की पहनाई[1] चीरे तो दश्तों को फ़स्लों के मुज़्दे[2] सुनाए
मिलों की मशीनों के जाये ये मज़दूर, धरती के खेतों के बेटे ये हाली
हुए 'ताशक़न्द' व 'बुख़ारा' के सुल्तां बने 'कनेहिन' और 'मकडन'के वाली[3]

(4)

हमें भी हवस थी कि आदर्श के महल ऐसे बनायें कि ढाए न जायें
सरे-इश्क़ में बे सुतूं कोई काटें जुनूं को किसी 'नजद' में आज़मायें
किसी बहर[4] में ले के निकलें सफ़ीना तो पिन्हाए-पाताल तक घूम आयें
वो हीरों की वादी वो मूंगों के टापू कहाँ हैं चलो तुम्हें आज़माये
जो कंगाल हैं उनको धरती की दौलत इनायत करें मसनदों पर बिठाये
जो मज़दूर हैं उनको मेहनत का हासिल जो दहक़ान हैं उनको खेती दिलाये
जो नाकाम हों तो ग़ज़लख़्वां ग़ज़लख़्वां बढ़ें बहरे-पादाश बे ख़ौफ़ होकर
मरें तो मरें मिस्ले गिब्रील पेरी[5] जीएं तो जहाँ में दमतरोफ़[6] हो कर

मगर दोस्तों दोस्तो दोस्तो। हम जहाँ से चले थे अभी तक वहीं हैं
वो आदर्श के महल तो ढहा चुके, उनके खंडरात में ग़ौल बन के मक़ीं हैं
वो पहले-सा वहशत का आलम कहाँ है अभी से यह महसूस होने लगा है
उफ़ुक़[7] से उफ़ुक़ तक बड़ी मंज़िलें हैं करां[8] से करां तक बड़ा फ़ासिला है
बहुत जी में आती है यारों से कह दें, हमें भी पुकारो हमें भी बुलाओ
मगर काले कोसों की दुश्वार मंज़िल कहे जा रही है "अभी लौट जाओ"
गदाई में हम शहरे-किन्आं के सख़ियों के महलों के दीवारो-दर चूम आये
जो सच पूछो उस में बड़ी आफ़ियत[9] है मगर क़िल-ए-मिस्र को कौन ढाए?

हमीं गर्द बन कर पसे-कारवाँ धुँधले-धुँधले से क़दमों पर जमते रहेंगे
हमीं रास्ते के हर इक मोड़ पे इक न इक उज़्र पर यूँ ही थमते रहेंगे
मगर दूर की मंज़िलों की यह राहें तो वीरान अब तक हुई हैं न होंगी
जरी शहसवारों के घोड़ों की टापों से अनजान अब तक हुई हैं न होंगी
समझते हैं हम आने वाला ज़माना तुम्हारा है लोगों हमारा नहीं है
मगर अपने पाँव कि थक से गये-इन में और आगे बढ़ने का यारा नहीं है
यही रास्ता है रुके तो गये-रात लम्बी हो या बाट लम्बी हो, जाओ!
वो पूरब में मिमियाती भेड़ों के गल्ले बाड़े के पहलू में दहका अलाव

1. विस्तार, 2. शुभ समाचार, 3. संरक्षक, 4. समुद्र, 5. फ्रांस का इन्क़िलाबी, 6. एक हीरो, 7. क्षितिज, 8. किनारा, 9. कुशलता

कूज एक छोटा-सा पथरीला जज़ीरा है। जुनूबी[1] कोरिया के साहिल पर जहाँ अमेरिकियों ने शिमाली[2] कोरिया के जंगी क़ैदियो को रखा था। उनमें बहुत-से दस्तो-पा बुरीदा[3] थे। कैम्प के हालात नागुफ़्ता-बा[4] थे। क़ैदियों को उनकी हुकूमत के ख़िलाफ़ वरग़लाया जाता था। भूका रखा जाता था और उनके जिस्मों पर ज़बरदस्ती कम्युनिज़्म के ख़िलाफ़ नारे गोदे जाते थे। आख़िर उन लोगों ने बाँसों, पत्थरों और बैसाखियों के बल पर बग़ावत कर दी, जिस का अहवाल मग़रिबी[5] अख़बारों, रिसालों मे छपा। ये नज़्म उन दिनों "सवेरा" और "शाहराह" में छपी थी, लेकिन "चाँद नगर" के पहले एडिशनों में शामिल न की जा सकी थी। ये नज़्म और एक दूसरी नज़्म "कोरिया की ख़बरें" क्योंकि उस ज़माने की हमारी हुकूमत को इस क़िस्म का कलाम गवारा न था। दर्या-ए-यालू के पुश्तों पर हमला जहाँ कोरिया को बिजली पहुँचाने वाले हैड क्वार्टर्स थे और क़र्या सन्नजू की तबाही, बल्कि नापैदी, कोरिया की जंग के उन वाक़िआत मे से थी; जिसने ज़मीरे-आलम[6] को झिंझोड़ कर रख दिया था नंगी नर्सों के जुलूस निकालने की तस्वीरें भी दुनिया भर के अख़बारों में छपी थीं।

दक्षिणी, 2. उत्तरीय, 3. हाथ-पांव कटे, 4. अकथनीय, 5. पश्चिमी, 6. दुनिया की आत्मा

कूजे की लड़ाई

फिर कूजे में गोली बरसी, फिर कूजे में जंग हुई
फिर सुर्ख़ों ने साज़िश करके हिंसा का प्रचार किया
गोद में आज़ादी की हुमक कर आने से इन्कार किया
अपने बाग़ी राग अलापे, सुर्ख़-सुर्ख़ झण्डे लहराये
सारे बन्दी एका कर के निकले और मिल कर चिल्लाए
"हम को हमारे हाल पे छोड़ो; अजनबियो, इस देस से जाओ
नगर नगर को बन्दीख़ाना, खेत खेत मरघट न बनाओ"
उनकी बाग़ी ललकारों से वादी, वादी गूँज उठी!
फिर कूजे में गोली बरसी, फिर कूजे में जंग हुई।

हमने उन्हें कितना समझाया रूस की चालें हैं क्या क्या
हम लोगों को सात समन्दर पार से क्योंकर आना पड़ा!
पर वो हमारी इन्सानी हमदर्दी के क़ायल न हुए
जब्री मज़दूरी से बच कर आने पर मायल[1] न हुए
आख़िर हम टैंकों के दस्ते, तय्यारों[2] के बेड़े लाये
जुम्हूरी तोपों से दनादन गोले फेंके, बम बरसाये
सौ दो सौ वहीं एक बाढ़ में ढेर हुए, करवट भी न ली
अब कूजे में गोली बरसी, जब कूजे में जंग हुई

इस पर भी सुर्ख़ों के इरादे बाग़ी के बाग़ी ही रहे
बल्कि अब तो सुर्ख़ फुरेरे और भी ऊँचे उड़ने लगे
बाग़ियों के गीतों की तानें शो'ले से बरसाने लगे
शाम व सहर इस कैम्प से बाहर गर्म हवाएँ आने लगीं
इन लोगों को गाली झिड़की खाना तक मंज़ूर न था
अपने जिस्मों पर नारे गुदवाना तक मंज़ूर न था

1. आकृष्ट 2. जहाज़ों

ख़ून हमारा फिर ख़ौल उठा-फिर सोई ग़ैरत जागी!
फिर कूजे में गोली बरसी, फिर कूजे में जंग हुई

कहीं पत्थर कहीं बाँस की लाठी, कहीं चाक़ू था कहीं भाला
इन लोगों के पास लड़ाई को क्या क्या सामान न था।
इसी आलम में हमला करने पलटन की पलटन उमड़ी
अमेरिकी जानों की इनको ज़र्रा भर परवा न हुई
हम तनहा-और पास हमारे यही टैंक यही तय्यारे
इस पर भी हम लोग न कुछ घबराए न कुछ हिम्मत हारे
एक तरफ़ थे कैम्प के बासी, एक तरफ़ हम परदेसी
जब कूजे में गोली बरसी, जब कूजे में जंग हुई

कहने को इस कैम्प में छः सौ लँगड़े और अपाहिज थे
लड़ने में पर यही लोग थे दूसरों से आगे आगे
घुटनों और हाथों पे उचकते बढ़ते थे ज़ालिम वहशी
एक एक के हाथ में थी लकड़ी की भयानक बैसाखी
हम लोगों के पास तो जो हथियार थे, हम ने कह ही दिया
इस पर भी इस जंग में हम लोगों ही का पल्ला झुका रहा
अस्सी नब्बे वही मरे और एक हमारा अमेरिकी
जब कूजे में गोली बरसी, जब कूजे में जंग हुई

अम्न का साथ हमेशा दिया है अम्न का साथ सदा देंगे
चाहे हमें इस अम्न की ख़ातिर तीसरी जंग भी लड़नी पड़े
अम्न की और किसे ख़्वाहिश है आज़ादी की किस को तलब
एटम बम, नेपाम के गोले जो माँगो तैयार है सब
पहुँचेगा अभी इन की बदौलत दूर दूर तक अम्न का नाम
कोरिया में लड़ने वाले अमेरिकी जांबाज़ों को सलाम
तारीख़ों में नाम रहेगा दुनिया कभी न भूलेगी!
क्यों कूजे में गोली बरसी, क्यों कूजे में जंग हुई।

(1952)

कोरिया की ख़बरें

आज अमेरिका के बमबारों ने बमबारी की
बन्द 'यालो' को तबह करके बिलआख़िर छोड़ा

नीमशब गंजे एडिटर को जम्हाई आयी
एक कॉलम में कहीं उसको भी उसने जोड़ा
ईदे-मस्ऊद के पैग़ामों के थोड़ा नीचे
और उसी शाम को अख़बार वो बासी भी हुआ
और यालो के बड़े बन्द की बिजली गाहें!
एक झुलसे से ख़राबे[1] के सिवा कुछ न रहीं
कफ़ उड़ाती हुई यकबारगी लपकीं मौजें
आहन[2] व संग[3] की दीवारें जो त्यौरा के गिरीं
और उस रात कहीं नूर न तक़्सीम हुआ
कारख़ानों की वो देवज़ाद मशीनें न चलीं
इतने बरसों नये इन्सान ने पत्थर ढोए
तब कहीं साहिले-यालो का ये पुश्ता उभरा
दूर की मिल के मचलते हुए पहिये घूमे
दूर के शहर की शहराह का चेहरा चमका
और अमेरिका के बमबारों की इक टुकड़ी ने
एक साअत[4] में उसे नेस्त व नाबूद किया

अपने इस मुल्क से वो प्यार है हम को कि इधर
दूसरे मुल्क का कव्वा भी न आने पाये
और इक देस में जब वहशी हूणों के लश्कर

1. खंडहर, 2. लोहा, 3. पत्थर, 4. घड़ी

मौत के तुहफ़े गुलामी के संदेसे लाये
हमने इन लोगों की नुस्रत[1] की दुआएँ माँगीं
हमने उन लोगों की अज़्मत[2] के क़सीदे गाये

यां न शो'लों की तपक और न तोपों की शिल्लक[3]
यालो दर्या है बहुत दूर बहुत दूर कहीं
फिर भी इक बात है इन्सान से हैवान तलक
जिस का इस हाल मुश्किल ही से आएगा यक़ीं
अब के यालो के बड़े बन्द की बिजलीगाहें
एक झुलसे से ख़राबे के सिवा कुछ भी नहीं

(2)

कोरिया में है लड़ाई की नयी सालगिरह
आज इस जंग के आग़ाज़ को दो साल हुए
पढ़ने वाले ने कनखियों ही से इस को देखा
और अख़बार के दो चार उलट कर सफ़्हे
"अब के शहज़ादा अली किस से करेंगे शादी"
एक मज़्मून को पढ़ने लगा बेताबी से

जैसे यह सालगिरह ईदे-अज़ीज़ां ही तो हो
जैसे कुछ देर में लाते हों सजीले मेहमां
एक नन्हे से हसीं चाँद की दिलजोई को
नक्हत[4] व रंग व लताफ़त मे बसे ख़्वाने-गिरां[5]
शोरे-तबरीक में तुहफ़ों के खुलेंगे धागे
और हर शै पे मचल जाएगा वो जाने-जहाँ

और यह जश्न यही सालगिरह दूर कहीं
एक वादी में से गुज़री है जो चुपके चुपके
कोई सेहरा का छलावा किसी लाशे के क़रीं[6]
किस के होंठों की हलावत[7] के पुराने क़िस्से
एक लम्हे को सुनाते हुए रुक जाता है

1. विजय, कामयाबी, 2. महानता, 3. घन-गरज, 4. ख़ुशबू, 5. भारी खाने के थाल, 6. क़रीब, 7. मिठास

और कहता है कि इस बात को दो साल हुए

दूर के देस से आते हैं सजीले मेहमां
कोरिया के लिए तुहफ़े में खिलौने ले कर
ये हैं बमबार ये नीला-सा है यू एन का निशां
ये रहे टैंक ये तोपें ये जियाले लश्कर
ये रही मौत ये वीरानी ये बन्दीख़ाने
तुझ से क्या चीज़ है ए जाने-बिरादर बेहतर

दश्ते-वीरां में किसी ग़ौले-बियाबां की तरह
क़ाफ़िले कोरिया वालों के भटकते निकले
कौन मंज़िल है कहाँ पहुँचेंगे भटके राही
आप कट जाएँगे इस राह के कटते कटते
दर्द की रात है लम्बी शबे-हिज्रां[1] की तरह
जिस में महताब की मश्अल[2] है न तारों के दीये

(3)

सत्हे-काग़ज़ पे सियाही ने चुनी है अफ़्शां[3]
मलगिजे मलगिजे[4] सफ़्हों पे ये बेजां सी सुतूर[5]
कितनी गोदों के उजड़ने का बनी है उन्वां[6]
कितनी माँगों से दहलाती हैं रसीला सिन्दूर
कितने खेतों मे उगाती हैं पुरआशोब धुआँ
कितने मैदानों में क़ब्रों की क़तारें भरपूर

रेडियो शाम का लाता है शपाशप ख़बरें
हर नयी सुबह चला आता है ताज़ा अख़बार
आज तो 'सन्नजू' का भी याद आया ज़द में
अब तो इक झुलसा ख़राबा है वो खस्तः मिस्मार[7]
आज नेपाम ने झुलसा दी है किश्ते-दहक़ां[8]
आज ज़िंदों के लिए खोदे हैं ज़िंदों ने मज़ार

1. वियोग की रात, 2. मशाल, 3. सिन्दूर, 4. मटमैले, 5. पंक्तियाँ, 6. शीर्षक, 7. ध्वस्त, 8. किसानों की खेती

बहसें होती हैं भरे कैफ़ों में ऐवानों[1] में
कौन इस जंग में मुजरिम है ये किस को मालूम
कौन से मुल्क की सरहद है कहाँ क्या जानें
कोरिया वाले कि अमेरिकी हैं इस में मज़्लूम
क्यों अबस[2] जी के जलाने को तुम अख़बार पढ़ो
एक हम ज़िन्दा हक़ीक़त हैं, ये बाक़ी मौहूम[3]

ज़ख़्मी बच्चों की कराहों में तरन्नुम न लोच
नंगी नसों की निगाहों में न रस है न मिठास
झुलसे खेतों के नज़ारे से फलती नहीं सोच
सूने शहरों ने तो पहना है उदासी का लिबास
फिर वो कुछ लोग सजाने चले ऐवाने-ग़ज़ल
कोई मज़्मूं ही नहीं शाइरे-मज्बूर के पास

आज यालो है तो कल और भी पुश्ता कोई
अब 'सन्नजू' है तो कल और भी क़र्ये[4] होंगे
आज पूरब के ख़राबों[5] में है उतरा कोई
कल ये करगिस[6] भी अतराफ़[7] में फैले होंगे
आज के रोज़ जो ये बात न समझा कोई
आने वाले हैं जो अय्याम[8] वो कैसे होंगे?

(1952)

❑❑

1. प्रसाद, 2. व्यर्थ, 3. भ्रममूलक, 4. गाँव, 5. खंडहर, 6. गिद्ध , 7. चारों ओर, 8. दिन